नम्बर ५२४
व्रत-चर्या निष्पात्मसती
स्वप्रादि टीका ग्रंथः

॥श्रीकृष्णाय नमः॥ अथ श्री व्रजस्तवयोकी टीका भाषा में लि-
ख्यते॥ श्लोक॥ कुमारीलोकाधारवरमिलनमाकर्णय य
द्रमासमाघ्रातस्यैः स्मेरस्मितलवजिताशेषसुदृशां अलंत
द्भाग्योत्कायद्अतिमधुरो माधववरो व्रजो जातो लोकत्रयपु
वतिमग्यः सहचरी १ याको अर्थ कुमारिका श्रीको श्रीरा
धाजूके वरको मिलिबो सुनिके रमाजो श्रीलक्ष्मीजी तिनसे
माघ्रातस्यं अभिलाषा श्रीठाकुरजीकी एकलव सौंदर्यता
अरु मंदहास्यनें जीते हैं अशेष सुंदरी बहुत नायिका अ
षजीती है उन कुमारिके परम महाभाग्यकी उत्कंठा लं पूर्ण
कहां लों कहिये ज्यातें अत्यंत मधुरं मधुरं मधुरं मधुर
धिपतेरखिलं मधुरं माधव अरु सो लक्ष्मीपति प्यारो सो
वर होइ करिकें ताके वस होत भयो सो कों त्रिलोकीकी यु
वती स्त्री षोजत फिरत हैं और पावत नांहीं हैं ताकुं वरिक
रिकें पाए हैं हे सहचरी सखी २ श्लोक पुरैव जनकात्म
जारमणहार्दसंपादि स्वभाग्यपाति यस्यो व्रजे प्रकटितारभ
वुः प्रिया हरिस्थितिविहारभूरिति विनिश्चयेनो समाधधि
व्रजभक्कुर्वन् स्थितिमतंद्रमोदायनाः २ याको अर्थ पहि
लें हि जनकात्मजा रमण श्रीसीताजूके पति जो श्रीकौसल्यानें
द श्रीरामचंद्र जु कुमारिनको हार्द जो गूढभाव रिरंसा
भाव संपादन कीनों बरदान दीनों है सो अपुनें भाग्यकी
निधि व्रजविषें प्राण प्रिया प्रकट होत भई हैं ये कुमारि
का श्रीठाकुरजीके विहारकी स्थितिकी भूमि हैं विनिश्चय
करिकें उत्तमतें अधिक व्रज अकुर्वन् स्थिति व्रजविषें
स्थिति करत भयो बहुत ही हर्ष आनंदको अयन हैं स्थान
हैं ये कुमारी २ श्लोक ततइहसमयेगोकुलजनजीवन
चरणरेणुराविरभूत् स्वयमेव सकल निजगुणकलो

व्रत· पमानंवहन्नाथ्य ३ याकोअर्थ तदनंतरयहसमयविषें
श्रीगोकुलजनजीवनकीचरणरेणुप्रकट भई कैसेंके
सेंजोप्राणनाथआपुहीसकलआपुनेगुणकरिकेंकी
नीहें उपमाकोंनाथआपु वहतहे ओर उपमा देवेकोंहें
नाहीं २ श्लोक नंदात्मजरूपामृतविभ्रमसंमोहिताःस
र्वाः आलिदुर्लभतत्संगमकृते व्रजेत्यामतिंमुदाकुर्वन् ४
याकोअर्थ नंदात्मजजोश्रीकृष्णताकेसौंदर्यादिरूपामृ
तकेविभ्रमकरें विलासकरिकेंसम्यक्सबमोहे अति
सेदुर्लभताकोसंगम तातेंउत्तमनिबलकीकृतिविषें
आपुमतिकोंआनंदहर्षसोंकरतिभईहें ४ श्लोक चंप
ककुवलयजातीकुर्वककुंदादिपुष्पसंपत्या विजितव
संते कुर्वन्हेमंतस्तत्सोव्रतारंभ ५ याकोअर्थ चंपाकु
वलयनीलोत्पलकमल जातीजाय कुरवक गुलाबकुं
द आदिपुष्पकीसंपत्तिकोंलीयें व्याप्तकरिकेंजीतेहें हेमं
तआरहेमंतकीरात्रिविषेंकात्यायनीव्रतकोआरंभकर
तभएहें ५ श्लोक हेमंतरात्रौप्रियतमगाढाश्लेषानुकूलेय
त् विधुरपि निजं हित्वा न निरंजमणीरात्रिमाश्लिष्यः ६
याकोअर्थ हेमंतकालविषेंव्रतकेआरंभतेंआपुनेप्राण
तेंहूंप्रियतमसोंविगाढआलिंगणअनुकूलहे जातेंचं
द्रमांहूंवक्रतकाललोंछोडतनांहींहें आपुनीरमणी य
हरात्रिकों आश्लिष्य आलिंगणकरिकेंरहतहे अभिप्राय
यहजो रात्रिवक्रतहीबडीलंबीहोतहे यहसूचनकीनी
हें ६ श्लोक अचिरेणासितांभोजविकासेनासितेक्षणे सू
चयत्यचिरात्कृष्णचंद्रेणासोह्यगुत्सवं ७ याकोअर्थ
अचिरेणासिताजजो नीलोत्पलकमलकेविकासकरि
केंअसितस्पोमईहरणनेउविषेंसूचनिकाकरीयतहे

ज्योवेगहीकृष्णचंद्रकरिकें आसाइनकीद्रष्टिको महा
महोत्सवहोइगो ७ श्लोक रजनीकररंजितविकासि
तसमरंदकुवलयेरासं सूचयतिकेलिचुंवनरागेसु
दृत्रां विलोचनयोः ८ याकोअर्थ रजनीकरजोचंद्रमा कर
ताकेकरजोकिरण ताकरिकेंरंजितकरे आरक्तरंगेओ
रविकसितप्रफुल्लितनीलोत्पलकमलकेमकरंद सोम
करंदकहे मकरंदयहीतीनोंधमेकरिकें इनकोंमारन
कोंसूचनकाजनावतहे जोकेलिचुंवनकोरागतुंम्हारे
लोचनविषेहोयगो ८ श्लोक कुंमुलायमानकुवलय
कुलेप्रभातेपुरविकरायंत्पकरुणैः ज्ञापयतिरात्रिजागर
सरसरागतन्नेत्रयोर्निद्रां ९ याकोअर्थ मुद्रितमानकु
वलयजोरात्रिविकासीउत्पलनीलोत्पलकमलकेसमू
हसोप्रभातप्रातःकालविषेसूर्यकेकिरणआरक्तताक
रिकेंरात्रिकोउजागरोइआवतहे प्रातःकालकोंआरक्तने
त्रनिद्राकरिकेंकुंदितमुद्रितमुद्रितजात्तहे ९ श्लोक कोका
लस्वरात्रिविसरलोलकुमुदकदलध्वनीहृनलैः चिरमि द्द
हतापसपदवीविरहिजनं प्रापयत्युच्चैः १० याकोअर्थ
कोकाजेचक्रवाक तिनकीविरकीआर्तिजेउच्चस्वरप्रलापके
ओरसीतलकमलिलजोवयारि ओरकुमुदजोरात्रिविका
सिकमल ताकोआल्हादताकीधुनिचंद्रमांताद्रराज्ञिरि
करिकें चिरं बहुतकाललों यहतापसीतपस्याकीपद
वीकोंविरहिजनकोंउच्चकरिकेंप्राप्तिकरतहे विरहीज
नकेकोककीआर्तिकोस्वर सीतलवयारि कुमुदाल्हाद
कीध्वनि चंद्र एतादृशा आदिअग्निकरिकेंबहुतकाल
लों उच्चतापसकीपदवीकोंप्राप्तकरतहे १० श्लोक विक
शितकुंदेविहसैसतिसुंदरचंद्रावलोकनादेव प्रकटंपुष्प

अ॰टी॰ वतीर्नवकुमुदवधूः कामहत्तलज्जाः ११ याकोअर्थ्य य
हकुंदपुष्यजोविकासितहे सो विकासकोंप्राप्तिभयोहै
सोमांनोंहसतहे सोकाहेतेंजो सुंदरचंद्रकेअवलोक
नतेंहीहे सोनूतनकुमुदवधूजो कुमदनीकोंपुष्यव॰
तातें तीप्रगटभईहे सोंकूंदर्पउदकरिकेंहतलज्जाभईहे सो
पुष्यवतीस्त्रीपुरुषकोंअनुकूलकरतहे यहदेषिकें
कुंदकामपुष्यहसतहे ११ श्लोक कोप्यकृष्णजलेनो
ये घस्पृष्टीतेनच प्रभोः एतत्संगाभिलाषांगसंगोसूच
यतिद्रुतं १२ याकोअर्थ्य थोडोकउष्णकृष्णजलश्रीजमु
नाजीकेजलविषें अघः कृष्णता अंगस्पर्शीतकरहश्री
प्रभुजीसाथयह व्रजभक्तनकोअंगसंगकीअभिलाषनि
कोबेगिहीअंगसंगविषेंसूचनकरतहे तेजोप्रथमउ
ष्णकालसमये श्रीयमुनाजलसोंविषहोतहे तापाछेंस
र्येउदय पाछेंनिकसतेंसमयेजलशीतलहोतहे तातें
सूचनकीनोंजो प्रथमतापविरहतापकेंपाछेंशीतसंग
महोइगयो सूचनकीनोंहे १२ श्लोक वेपथ्युशीत्कृ
तपुलकैरिमेयतांवालिसहसमप्येताः मत्वाकुमारिका
रतिकेलिपुयोग्याव्रजेशस्य १३ याकोअर्थ्य कंपअरुश्री
त्कार पुलकरोमांच तातेंशीत्कृतकंपसीत्कारपुलक
कोंश्रीयमुनाजूसषीसिषावतहे श्रीयमुनाजीइनकीस
हजइच्छाअलिरवीहे एआलियहव्रजभक्तनकोसहजइच्छा
एताद्दशाहे इनकोंकुमारिकामांनकरिकेंव्रजेशाकीर
तिकेलिविषेंअतियोगपलमहे १३ श्लोक कुसुमैरतिर
तिखेदस्वेदेविरहएपुद्दशुजलवर्षैः द्विवश्राहरिविरहोष्मा
इतिशीत्कारैश्चषद्रूपे १४ कुलकं याकोअर्थ्य दशश्लोक
कोसंबंधकुलक कुसुमकरिकेंवसंत औरअतिशायरति

केस्वेदकेप्रस्वेदकरिकैंग्रीष्मविरहिणिजलरूअश्रुजल
कीवर्षाकरिकें वरषादिवशविषेंश्रीठाकुरजीकेविरह
कीउष्मतातेंशरत ओररतिसीत्कारसोशिशिर छरूप
छरूरितुविषें कुसुमकरिकेंतोवसंत ओरअतिरति
स्वेदकरिकेंतोग्रीष्म ओरविरहनिअश्रुलेंजेबर्षाकरि
केंतोवर्षा दिवशविषेंश्रीठाकुरजीगोचारणकोपावधार
तहैं तातें विरहकीउष्मताइहसरत ओररतिसीत्कारक
रिकेंहेमंत हेमंतेप्रथममासेरतिप्रीति शीतओरशि
शिरविषेंबकुलकरिकेंशीत्कारहै याकरिकेंश्रीवृंदावन
विषेंसदांछरूरितुसेवाकरतुहै १४ श्लोक कालिंद्याया
पुलिनप्रियतममनोवाक्कुलेवराः सखी परिधायचापरं
शुचिनिवीदेवींसमानर्चु: १५ याकोअर्थ श्रीकालिंदीज
केंअपुलिन आसमंतातनाहिकरिकेंप्रियतमकुं मनव
चशरीरसर्वा: सर्वकरिआसमंतातनाहिकरिकें ता
पाछेंदूसरीपरमपवित्रसाडीपरसपहरिकरिकेंका
त्यायनीदेवीकीपूजाअर्चनकरतिभई १५ श्लोक शृंगा
ररसरूपात्मकमरालेकाप्रतिपादकों पठत्स्वलिमुनिस्था
लिश्रुतिकुमुदकाननें १६ याकोअर्थ शृंगाररसरूपात्म
ओरपरमउज्ज्वलसोराकप्रतिपादक एतादृशश्रुतिरूपुषि
श्रुतिकोमहामुनीश्वरजोभ्रमरीकोस्वरूपपाइकरिकें
शृंगारगानाश्रुतिपठतहै कमलसमूहकेबनविषेंश्री
ठाकुरजीकोंश्रुतिगावतहै १६ श्लोक अचिरेणाशिगामि
सत्यपिइंद्रेस्तंहर्षवलस्तुकुमुदेषु षोडशासहस्रगोपीव
दनेंदुष्वागतेषुसखि १७ याकोअर्थ वेगहीशिशिरमपिसा
त्यपि चंद्रविषेंतेहर्षवलसातिविकाशीकुमुदिनीविषेंप्रातः
कालनिकटआयोहो तातेंचंद्रमावेगिअस्तकोजाइगोताहू

ब्र·टी· तेहर्षवंतकुमुदनीविषें सोरहसहस्रगोपीबदनचंद्रश्रा
वनेविषेहर्षवढेगो हेसषीएकचंद्रजायगोतोइसोरह
सहस्रगोपीवदनचंद्रश्राएहें १६ श्लोक सूर्यानुदयेप्येत
दंत्राधरद्युतिरुचिरतेजोभिः श्रर्द्धविकासेसरसिजवृंदे
शुभसूचकेनचिरात् १७ याकोश्रर्थ सूर्यकेश्रनुदयविषें
हूयहकुमारिकानकेदांतनश्रोरश्रारक्तश्रधरताकी
द्युतिरुचिरसुंदरकांतकेतेजकरिकें कमलकेसमूहको
श्रर्द्धविकासभयोहे जांनेंश्ररुनउदयभयोहे तातेसूर्यके
श्रीकमलफूलनलागे शुभसूचककरिकेंवेगिहीसूर्य
उदयहोइगो यहभावहे १८ श्लोक श्रचिरादेवोदेष्यत्य
स्मत्कुलबंधुरित्यमंदमुदा कोकेषु विगतशोकेष्वन्यान्य
निकरमनुष्यतेषु १९ याकोश्रर्थ कोककहतहेंजो वेगि
हिउदयहोयगो हमारेकुलबंधुजोसूर्यपाकरिकेंवक्र
तहीहर्षश्रानंदसोंकोकविशोषणभयोहे हर्षसोकजा
कोताविषेंकोककोकनीसमुदायाश्रन्योन्यनिकरश्र
नुसारतहोतभयोविष १९ श्लोक स्त्रियोभिसारिकाभा
सायास्तासंपरिलोगतेसिंजन्नूपुरघोषेणपापेनियो
पित्तिखिले २० याकोश्रर्थ स्त्रीजेहेंसोश्रभिसारकोश्राभा
सहे जातेंलेकुमारिकास्त्रीयोकेबरितउतावलेवेगिश्रा
वनेंकरिकें सिंजय सब्दायमाननूपुरकेंघोषकरिकें
वक्रतहीनूपुरकोएकत्रसब्दकरिकेंश्रखिलपापप्रति
बंधरूपहरिभये व्याघ्रसिंघसर्पवीछूश्रादिप्रतिबंध
रूपदुष्टश्रद्रष्टश्रापुसबनासभए भागिगए कुलकेंए
केकप्रकर्लेकोकुलके २० श्लोक यदभिमुखंपूज्जातश्चक्रः
साशापियत्ररागवती श्रभवत्तत्रतद्दिष्टः कस्मा रागी तिकि
चित्रं २१ याकोश्रर्थ जापूर्वदिसाकेसनमुषकोंतेसुंद

री पूजा करत भई सषी आसा पिता दिशा कों हूं जसें अनुरा
गवती अरुन उदय तें आरंभ करत भई है सो तहां ता
के परम इष्ट तम कृष्ण कों अनुरागी होइ यह कह्यो आय
ये है २१ श्लोक विचित्र सिकतामयीं प्रतिकृतिं विधायाद्भु
ता यथाविधि समागतास्व निगमैः समावाहयंनाः पवित्र
तमपाद्यमाचमनमर्घ्यं पूर्वं ददुस्तता वरविभूषिता सषि
चकारस्पकात्यायनी २२ याको अर्थ विचित्र सुंदर रनमा वि
कासमयी की प्रतिकृति कों परम अद्भुत सौंदर्यतम को करि
कें वेदोक्त विधिपूर्वक जैसें होइ आपुने पुष्टिमार्गीय वे
दमंत्र करिकें सम्यक् आवे ताकरिकें सम्यक् आवाहन क
रत भए आधे देवी की देवी को ताप्राछें पवित्रतम पाद्य ज
ल करिकें पाव धोइये ताप्राछें अर्घ्य आचमन पूजा सामिग्री
पहिलें देवी कों देत भये तदनंतर उज्जर केसरी अं
बर वस्त्र करिकें विशेष आभूषण कीनी है सिंगारी है
सषी ताकरिकें अतिशय सुंदर जगमगात है सोभा
यमान होत भई कात्यायनी २२ श्लोक ततः कुंकुमपाटी
रपंकेन लिप्यतां प्रियाः प्रकुर्वन्नवसौवर्णसर्वाभरणभू
षितां २३ याको अर्थ तदनंतर केसर और बावना चं
दन के कीच करिकें प्रियायोंने लेप कीनों देवी को ताप्राछें
नौतन सौवर्ण के बिबिधि रत्न षचित सर्वांग आभरण
करिकें भूषित करत भई अंगार करत भई २३ श्लोक 8
सुरभिप्रसून निर्मितमाला परिधाप्य विविधकुसुमैः
स्ता: श्रद्धाविशुद्धमनावस्तामानर्चुप्रवालैश्च २४ याको अ
र्थ अत्यंत सुगंध पुष्प करिकें ते सुंदरी निर्मल माला देवी
कों पहिरायकें भांतिभांति के पुष्प करिकें परम श्रद्धा
पूर्वक करिकें और विशेषेण शुद्ध भाव करिकें विविधिकु

श्र-टी श्यामश्रोरकोमलतमश्रारक्तप्रबालश्रंकुरपल्लवकरिकें
तेकात्यायनीदेवीकोंपूजतभईहें २४ श्लोक पीतारुण
स्तैरद्भिर्विविधैर्धूपदीपकैः स्वनाथप्राप्तिकांदेवीतां
संतुष्टामभावयन् २५ याकोश्रर्थ पीतश्रोरलालश्रक्षत
करिकें श्रद्भिः जलकरिकें विविधिश्रगरश्रादिदेकेंधू
पकरिकें श्रोरदीपश्रारतीकरिकें श्रपनेप्राणनाथकीप्रा
प्तिकी प्राप्तिकरावनवारीदेवीको ताकुमारिका देवीकोंसं
तुष्टकरिकें कहतभई २५ श्लोक विविधापूपैःसघृतैरा
म्रैः खर्जूरनारिकेलैश्च कदलीफलैस्तुदाडिमबीजैर्द्राक्षाकु
शीमिश्च २६ याकोश्रर्थ विविधमालपूवा दधपूवा क
ठपूवा श्रादिकरिकें बहुतसेघृतसाथ श्रामखर्जूरना
रीयरश्रीफलकरिकें केलाफल दाडिमकेबीजकरिकें
द्राक्षाश्रोरदाखकीकुंकुमीकरिकें २६ श्लोक श्रमलफ
लादिभिरुच्चावचैः प्रकल्प्यापरमाचांते तांबूलसमर्प
यित्वाभक्त्यास्वाः तामुक्ताः २७ याकोश्रर्थ श्रमलफला
दिकरिकें श्रोरऊंचावीचकहें श्रनेकप्रकारकेउपहार
सामग्रीप्रकल्पनकरिकें भोगधरतभई तापाछेंभोग
सामग्रीश्रारोगेपाछें श्राचांतेकहे श्रचवातभईहें तापा
छेंतांबूलकोंसमर्पिकरिकें सर्वकुमारिकाश्रत्यंतभ
क्तिस्नेहकरिकें कात्यायनीदेवीकोंसाष्टांगप्रणामनम
स्कारकरतभईहें २७ श्लोक मुदाकात्यायन्यानिगम
मतिहार्द्दोदितमये महाभागेयः प्राप्यगनुदिततरःपंके
जभुवि महायोगिन्यप्यद्भुतरतिभराधीश्वरितदाजपत्य
स्तामोनंदधुरखिलगोपाधिकरुचः २८ याकोश्रर्थ मुदा
हर्षानंदसों कात्यायनीमहादेवीश्रासमंतात् निगमवेद
तमतकोरहस्यहार्द्दउदयभयो यहकात्यायनीश्रपोहेम

हाभागे कात्यायनीकोसंबोधनयहजोमहामंत्रयहिमें
ब्रह्माकेअनउदितनर पंकजभुविजोब्रह्मा ताकेप्र
कटरजोब्रह्माप्रकटहूनभयोतो तबयहमहामंत्र
निगममेंश्रीठाकुरजीआपुउदरमेंकौनसोमंत्रजोरहे
हायोतिन्हूपरमअद्भुतरतिनरकीअधीश्वरयहीम
हामंत्रको तबयेकुमारिकायामंत्रकोंजपतमहामौन
कोंधरत तबश्रोरसबगोपीनतेंअतिशयअधिककरूव:
कांतहोतभई २८ श्लोक सुकृतंदेविपदभूत्पतिश्रीप
तिमेवतत् अकरोत्करुतेहिष्टमपिसागामेनेस्कृया
याकोअर्थ हेदेवीएताद्दशपूजाकरिकेंमंत्रकोंएकाग्र
चित्तमौनधरिकेंकीनेंतेकछुसुकृतपुण्यजोहोतभयो।
हे सोताकरिकेंश्रीपतिजोब्रजलक्ष्मीपतिनंदसुतता
कोंहमारोपतिकरो एताद्दशजोतोऊकृतकरे ताकोंश्री
पतिकोंइनकेपतिकरतहें सोतूहमारोसहाईहैतूंकरि
कें तोतुमहमकोंकहाकहोगे तोहमतुमकोंनमस्कार
कीकृपाकरेंगे २९ श्लोक स्तुतिरिवत्त स्वतएववस्तुहृदि
प्रादुर्बभावात्मनाश्रितात् कीताभावापन्नाजातास्तन्मेन
जानेहें ३० याकोअर्थ हेपुष्टीतदनंतरश्रीठाकुरजी
आपहीहें आपुनेहृदयविषेंबेगिहीप्राणप्रियाकेहृ
दयमेंप्रकटहोतभएहेंश्रीठाकुरजी तबतेंकुमारिका
केसीभावापन्नहोतभई तोउनकेहृदयकोअनुभव
हीजानेंतेतोमेंनाहीजानतहें ३१ श्लोक हृद्येवप्राप्तस
वास्तःपतित्वेगोपिकापते त्रिलोकीत्रणवन्मुक्तिमतिनु
छामनसत ३१ याकोअर्थ श्रीठाकुरजीकोमिलापहृ
दयमेंहीसंपाद्यस्योहें सोपतित्वविषें गोपिकापतिजो
श्रीठाकुरजीआपराधावरताकोंआपनेंपतित्वविषेंहृ
दयमेंमिलापभयोहें तबयहब्रजकुमारिकासर्वत्रिलो

 की कोटिकोटि ब्रह्मांडतें बाहिरलोकएकब्रह्म परोक्ष कतिनु 
कावत् और पंचविधिकी मुक्तिकों अतिशयतुच्छत
मप्रापुनें मनमें मानतहे ३१ और इहमंत्रकौन
सोजपतभयोजो कात्यायनीमहामाये महायोगिन्यधी
श्वरी नंदगोपसुतंदेवी पतिंमेकुरुतेनमः इतिमंत्रंज
पंत्यस्ताः पूजांचक्रुः कुमारिकाः एवंमासव्रतंचेरुः कुमा
र्यःकृष्णचेतसः याकोअर्थ प्रथममासमें कात्यायनीपू
जाकीनी ताकोफलतो कृष्णचेतसभयो श्रीठाकुरजीको प्रा
पुयहव्रजभक्तकेहृदयमें मिलेसंवादभयोहे ३२ श्लोक
अथतत्कमपिशुभद्रसमयंयस्मिन् प्रियांगसंगोत्र भ
वतिमनोर्थपूर्तिम्वासत्सखः व्रतीहत्य ३३ याकोअर्थ
तदनंतरकोतरू सुभद्रसमयको जासमयविषें इहांब
ऊरि प्राणप्रियश्रीठाकुरजीकें अंगसंगाकेलिहोइ और
हमारे चिरकालको मनोरथकोमूर्तिहोइ हेसखः तास
मेंकीप्रतिक्षाकरतहें ३३ श्लोक तत्सुमुखि भद्रकालीम
र्चेत्य उदारमासामुदिता अभवत् भगवद्भावामलाब्धि
लहरीमिलिताः ३३ याकोअर्थ तदनंतर हेसुमुखि
भद्रकालीदेवीकीपूजाकरतभई दूसरेमासमेंसोह
र्षसंयुक्त परमउदारमनसों अंतःकरणकरिकें सो
काहतेंजो अंतःकरणमें निश्चयभयोहे जोश्रीठाकुर
जीहमारेपतिभए अबसमयकीप्रतिक्षाकरतहे तातें
उदारउदितमनसोंहोत भगवद्भावामलसमुद्रकीलह
रीकरिकें आसक्तहोतभए ३३ श्लोक तथाहि ततइह
पिच्छापीडः पाटीरविलिप्तचारुसर्वांगः सुरेंद्रमतह्रिर
दस्मयहरगतिरेकलोरहसि ३४ याकोअर्थ तैसेंही
तदनंतरमयूरपिच्छचंद्रिकाको आपीडशिरोभूषणमु
कट और बावनांचंदनकरिकें लिप्तसुंदरसर्वांगजाको

सोसुरेंद्रदेवताकोइंद्रताकोउन्मत्तएरावतहस्तीकीग
तिकोहैगर्वकोहरणहारेहैं ताद्रशगतिकरिकेंचलत
एकांतविषेंअकेलेपावधारे ३४ श्लोक पृथुतरनितंब
बिंबोध्वसद्मलामृत्पपीतवसनश्री: सिंजद्रसनानू
पुरहृद्यगतिश्चचलावसेस: ३५ याकोअर्थ श्रीठाकुर
जीआपुकेसेहें स्थूलतरहें नितंबबिंबकांतिश्रीठाकुर
जीके तापरउध्वसत निर्मलअमृत्पपीतांबरकीसो
भाजोश्रीठाकुरजीआपुविषें औरसिंजतसब्दायमानर
सनाक्षुद्रघंटिका औरनूपुरएताद्रशसुंदरहृद्यसोंसु
दरगतिचालिसोंआवलभएहें औरचंचलहेंश्रवतंश
कर्णाभरणश्रीठाकुरजीके ३५ फेरिश्रीठाकुरजीआपु
केसेहें श्लोक ईषत्घुर्णितलोचनकमल:सहजास्मिता
तिमुग्धास्य: आप्यास्यत्यतिसुंदरःकेशवःगनेनमार्गेण
३६ कुलकं याकोअर्थ कछुइकघूर्णितलोचनकम
लनेत्रकमल औरसहजस्मितमंदहास्यमुक्तअत्यंतमुग्ध
सुंदरआस्य मुखारविंदश्रीठाकुरजीकोआवेगो अतिशय
सुंदरकुंदकीमालाधर यहयाहीमार्गकरिकेंआवेगो ३६
औरमेंकेसीहूं श्लोक कचित्सखरमुन्नतदृष्टिसंतप्र
दृष्टिमेवंमां उत्सकमनाभिलिष्यत्यंबुदइवचातकिग्री
ष्मे ३७ याकोअर्थ कछुकतोसखरखरासंयुक्तउताव
लीऔरऊंचीहेदृष्टि औरविरहकरिकेंसम्यक्तप्तदृष्टि
याप्रकारकीतोमेंहूं औरश्रीठाकुरजीआपुकेसेहें अति
शयउत्सकमन उत्साहयुक्तहें तातेंमिलेंहोगेकेसेंजे
सेंमहाग्रीष्मऋतुविषेंअतिलज्जातिचातककोंस्वातिके
अंबुदमेंघनांहोग्रीष्मविषें ३७ श्लोक मरकतमणि
स्तंभसोभस्वबाहुयुगेनमतकृतसुकृततोमयाश्लिष्य
तुदारतरोरसा अहमपिसमाश्लिष्यगाढंविरपुलको

अ.टी. न्नतस्वभुजलतयाप्राणप्रेष्ठंघनस्तनमध्यगं ३७ याको
अर्थ श्रीठाकुरजीआपकेसेहैं मरकतमणिनीलमणि
केसुंदरतमस्तंभजेसे आपुनेंआजानवाहुयुगकरि
कें मेरे कौनेंहैं जोसुकृतपुण्यपुंजवतादिक तातेमोको
उदारतमरसकरिकें विगाढआश्लिष्य चुंवनादिकसव
करेंगे और फूलवजातहीकाललोंअति विगाढआलिंगन
करूंगी मेरेपुलकरोमांचउन्नतउठेंगे आपुनीआपु
नीभुजलतायाकरिकेंआपुनेंप्राणतेंअत्यंतप्रेष्ठतमको
मेरेमीडेसमासलकरेंगे घनस्तनमेघप्राप्तिकरूंगी
३८ श्लोक कर्त्ताचुंवनमुच्चैःसकच्यग्रममतमधुरतरवच
नं वक्तास्वलत्सुनासामुक्ताभूषणः सुरागवदः ३९ याको
अर्थ केलिश्रीठाकुरजीआपकेसेहैं कवचुंवनकेकर्त्ताहैं
सोकचग्रसहितवेणीदंडकोग्रहणकरिकें चुंवनकेक
र्त्ता श्रमततेमधुरतरवचनकेकहिकेबोलेंगे एतादृश
कर्त्तावक्तासोवोलतस्वलतसे सुंदरनासाकोमुक्ताकोभूष
णहै औरअधरकोधारकतातेंदांतरागयुक्तहैं ३९
श्लोक निसर्गरागातिमनोहराधरामृतं निजंमेसहिपा
यपिप्यति श्रीवमेंभावरसालविभ्रमोममाधरंपायपि
प्यतिकाकुसीतसोति ४० याकोअर्थ सहजईहीरागआर
क्तता करिकेंअतिशयमनोहरहै अधरपह्लव एतादृश
आपुनेंअधरामृतकोमाकोसोनिश्चयपिवावेंगे तवप्र
कटहोइगो भावरसालकोविलास तबमेरेअधरकोपा
ऊंगी काकुसीतकारकरतहे ४० श्लोक पाटीरलेपज्ञानि
तव्यवधानपिप्रियोऽसहिष्णुमेंपृथ्वीत्लतमुक्ताफलहा
रःसहजांगसौहृद्यः ४१ याकोअर्थ वावनाचंदनकोले
पज्ञानिसव्यवधानआोटविषेंहूंमेरोप्राणप्रियनांहीसह
तहे सहिनांहीसकतहे जोयातेंमेंगजमुक्ताकोहाररूपी

छिपाछैंकीनोंहै सोकाहेतेजो सहजअंगहीअतिशाय
सुंदरतमहै ४१ श्लोक कुवलयमालापीडः कुंतलसंक्रां
तकस्मर्मदतिलकः आगत्यालिंगनमिहरहसिकरिष्य
त्युदारतरः ४२ याकोअर्थ नीलोत्पलरात्रिविकासीकम
लकीमालाकोआपीडशिरोभूषणमुकटओरचूर्णकुंतल
सोसंक्रांतवहमिल्योकस्मरदजोकस्तूरीहै सोताकोतिल
क एताहृशाश्रीठाकुरजीआपुइहांएकांतविषेंआइकेउदा
रतमहें विगाढआलिंगनकरेंगेहैं ४२ युग्म श्लोक स
सखिभिरेवमिलितागत्वावृंदाबनीहकुंजेहं माधवेनंद
कुमारंमिलितासुखिताभविष्यामि ४३ याकोअर्थ आप
नीसमानसीलसखीकरिकेसाथलैमिलिकरिकेंमेंश्रीवृं
दाबनकेनिकुंजमेंजाइकरिकेंठाकुरपरमभावपक
रिकें श्रीनंदकुमारकोमिलिकरिकैंपरमसुखितहोइ
गे ४३ श्लोक मृदुलसवसोयमुनापुलिनेगत्वाहमेके
व रहसिप्राप्तेमाधवमतिरूढधविभ्रमैरंस्ये ४४ या चिरं
कोअर्थ कोमलजलसंयुतवालुविषें श्रीयमुनाजीकेपु
लिनविषेंमेंएकलीजाइकरिकेंपरमरहस्यहै सोएकां
तमाधवकोपाइकरिकें बहुतहीवारकरिलों उरूबहु
तहीबंधकेविलासकरिकेंमोकोंश्रीठाकुरजीरमणकरा
वहिंगे ४४ श्लोक प्रत्येकप्रेममुरुविधमानोरथास्ताःस
दैवकुर्वाणाः अन्यार्चनासमर्थ्येहाभवस्तद्भावनेसर्गात
४५ याकोअर्थ प्रत्येक एकएकहीयाप्रकारउरुविरुध
बहुतहीप्रकारके अनेकमनोरथकेअंततें व्रजसुंद
रीकुंमारिकासदाहीकरतरहतहैं औरअन्यकीपूजा
तें असमर्थनिश्चयहोतभई यहतिनकेभावको सह
जहीस्वभावते ४५ श्लोक व्रजभूदेवीनिचयाहृदिस्फुर
न्नंदगोपराजसुतः भवतुपतिस्वयमेवेत्यमित्रातमपू

ब्र·टी जयिन्नित्यं ४६ याकोअर्थ यहब्रजभूमिकी देवीकेंस
मूहकुमारिका इनकेहृदयविषेंश्रीनंदरायजू व
केसुतपुत्रस्फुरतभये इनकेहृदयमेंप्रकटहोतभए
हें तबआपुहीहमारेपतिहो जोयाप्रकारनिरंतरनं
दकुंमरकोंपूजाकरतभईहें सोयाप्रकारहेमंतकेप्र
थममासविषेंतोकात्यायनीपूजाकरी ताकोफलरूपचे
तसभईहें श्रीकृष्णहृदयविषेंप्रगटभएहें तापाछेंदूसरे
मांसविषेंतोसमयकीप्रतिज्ञाकरतहें सोश्रीकृष्णहीकी
पूजाकरतहें सोप्रार्थनांकरतभई ४६ श्लोक संपूर्णरा
त्रिरतिभावनयाविचित्रबंधश्रमैर्जलविहारमिचालिक
तुं उत्थायवस्त्रमयथात्यैतेसममांगेकलोपसिप्रचलिता
यमुनासमेता ४७ याकोअर्थ सहकुंमारिकानकोंसंपू
र्णरात्रितोरतिकेलिकीभावनायाकरतहें सोविचित्रबंध
करिकें श्रमकरिजलविहारकीनाईकरिवेकोहेआलि उ
ठिकेंवस्त्रकोअन्यथाधारतलागे बस्त्रअयथा तेसेंउल
मत्रंगविषेंकरिकेंजेसेतेसेंमांथेपरकरिकें वाउषसि
कालसमयकालीमहतेंसमय एकत्रहोइकें श्रीयमुना
जीविषेंप्रकर्षेणचलतभईहें ४७ श्लोक मार्गेब्रजंतो
निजमंडलौघमध्यस्थितंताःसखिमन्यमानाः अन्योन्य
संबंधभुजाविशी काजगुःप्रियंतद्रसभावमत्ताः ४८ या
कोअर्थ मार्गविषेंजातआपुनेंमंडलकेओघ समूहके
मध्यविषेंस्थितश्रीठाकुरजीकोंतेकुंमारिकामनमेंमांन
तभईहें सोभावनामेंसाक्षात्मांनतभई हेसखि तापाछें
अन्योअन्यपरस्परसम्यकबंधभुजानिःसंकपरस्परबा
हूबंधकरिकेंनिःसंकहोइकरिकेंआपनेप्राणप्रेष्ठकों
ऊंचेगावतभईहें सोश्रीठाकुरजीकेंरतिरसजोसंपूर्णरा
त्रिरतिभावनया विचित्ररसभावकरिकेंउन्मत्तहोइकें

रिकेंगावतिभई ४८ रागविभासराग विधुमधुरानन
आनंदमनसिजमानद गोपीनयनचकोरपाईनद
याकोअर्थ श्रीठाकुरजीआपुकेसेहैं चंद्रमाजेसोमधु
रमुषचंद्रहेजाको एतादृशहेइकरिकें व्रजभक्तनकें
मानदाताहें औरकंदर्पकेमानकोघातीकहें षंडनको
करतहें औरश्रीगोपीजनकेनयनरूपचकोरकों अं
मृतपांनकेदाताहें ध्रुवपद राधालोचनकुवलयमा
दनकामवरद अंजनरजनीप्रकटतारावलाधरामल
स्पंद १ याकोअर्थ श्रीराधाजूकेलोचनकुवलयरात्रिवि
कासीचंद्रकमलकेसेहे मोदनआनंदकोउपजावतहें
औरकेसेहें कंमवरदकेकामकेदाताबरकेदाताहे लोच
नमेंजोअंजनहे साईरजनीरात्रिप्रगटहे औरताराक
रिकेंआवृतजोचंद्रमा सोअधरामृतचुंवनहे १ गुर्जरी
रागए व्रजानंदकंदघोषपतिमानभुविजातं रसिक
वरगोपिकापीतरसभावतंजयतुममहृद्गिसुजा
तं ध्रुवपद याकोअर्थ सबव्रजकेपरमानंदकोकंदहे
मूलकारणकोकारणरूपहें सोघोषपतिजोश्रीव्रजराज
ताकेमहापरमभावरूपीभूमिवियेंप्रकटभयोहे सो
आनंदकोकंद सोरसिकवरसिरोमणि रसिकवरमु
कटमणि गोपिकाजीनें ताकेमुखारविंदकोअधरसु
धारसपांनकीनोंहे सोएतादृशजोतुमसोसर्वोत्कर्षबि
रतो ध्रुव रुचिरदरहासगलदमलपरिमललुब्धमधु
पकुलमुषकमलसदनं अमलचयगर्वनिर्वासनाधर
सिधुपायथमनोजाग्निसमनं १ याकोअर्थ अतिसुंद
रमनोहरईषदहास्य थोडोमंदहास्यकरलगलतचुंव
न निर्मलजपरमल सुगंधताकेलुब्धलोभीभ्रमरकेकुल
समूह एतादृशमुषकमलरूपसदनघरकोंतासदन

ब्र·टी· मेंसेंश्रमतकोचयसमूहकेगर्वकोनिर्वास गर्वकोदूरिक
रनवारो तुंम्हारोअधरसिंधुजोमादकहै सोहमकोंदिवा
इकरिकेहमारीमनोज्यासि कामाग्निकोसमायो १ स्मितप्र
कटितचारुदंतरुचिवदनविधुकोमुदीहतनिखिलतापे
विलसललितालहृदयकनककलसहृये मारकतमणि।
हिवउपराये २ याकोअर्थ मंदहास्यतेप्रकटितचारुसुं
दरमनोहरदंतकीकांतितेज औरवदनचंद्रताकीको
मुदीकहेजोत्स्नातेज उजियारोचंदजोत्स्नासर्वतापकोंह
रतदूरकरतहे तुंमविलासकरो ललितामनोहराकेहृ
दयविषेदोऊकनककलसविषेमरकतमणिकीनांई
एतादृशाहुरायहें ताविषें २ सुभगासुमुखीकंठनिहित
निजवाहुरतिमलगजराजवरचिरं विरहविरहान
लंचारुपुष्करचलनश्रीकरसस्पयरुचिरं ३ याको
अर्थ सुंदरसुभगासोभाग्यवती सुंदरवदनीकेकंठविषें
आपुनीवाहुराखिकैविश्व … यरतिमलगजराज
कीनांई सुंदरता … ऐसाहुसातुंमविहारकरिकेवि
रहअग्निकोसुंदर सुडादंडचलनकरिश्रीकरे अलक
ालिकाकरिकेसोचिंतसुंदरहोततेसेविरहानलसमाओ
३ अरुणतरलापांगश्चारनिहतकुलबधूधृतितवविलो
चनसरोजं ममवदनसुखमासरसिविलसतुसतत
मलसगतिनिर्जितमनोजं ४ याकोअर्थ आरताओर
चंचलअपांगतिरछेकटाक्ष एतादृशाकंदर्पकेपंचवा
ण निहत मारिलेगयोहै कुलवधूकोधैर्यविवेकलज्जा
कोंमारिलेगयेहें सोतुंम्हारेविलोचनकमल औरमेरेव
दनकीसोभारूपीसरोवरमेंनिरंतरविलासकरो केसेंतु
मअलसगतिडगमगातहे सोकंदर्पकोजीतिकरिकेंआ
यहें एसीतादृश मेरेवदनसुषसरोवरमेविलासकरो ४

नंदगेहेलिबालादितस्त्रीरागोसकेसवधसुरद्रुहं ब्रज
वरकुमारिकाबाहुहाटकलतासततमाश्रयतुकृत
लहं ५ याकोअर्थ श्रीनंदरायजूकोघरहीभयो आल
बालकेहेंथाहरो ताथाङ्करेविषेंउदितभयो अपोजो
स्त्रीनकोअनुराग सोस्त्रीयनकेअनुरागास्नेहकरिकें
सेकसींचोहे तासींचेतेंसम्पककवृक्षो वडोभयो सुर
द्रुहकोकल्परूपश्रीठाकुरजीहें ताकोंव्रजकेश्रेष्ठकुमारि
काहें तिनकीबाहुरूपसुवर्णकीलतावल्ली सोनिरंत
रकल्पवृक्षकोआश्रयकरिकेंरहाकरो आश्रययहजो
आलिंगनकरो ५ ब्रजश्लाघ्यगुणरसिकतागुणगोप
नातिशयरुचिरालापलीलं ताहृग्गीतृणजनितकुसु
मसरजावभरयुवतिषुप्रगटतरमिखिल ६ याकोअ
र्थ ब्रजकेस्तुतिकरिबेकोंयोग्यगुणरसिकताओररसि
कमणि औरगुणगोपनगुप्तकरिबेमेंअतिशयरुचिर
सुंदरआलापगुणगोष्ठीगुणलीला तालीलाकरि
नेत्रकरिकें साभिप्रायदृष्टि तिहिवेजनितउपज्योकु
सुमशरभावकंदर्पकेबाणकोभावकोभरहे आधिक
ता युवतीजनविषेंसबभावप्रकटतमकरतहें ६ रु
चिरकौमारचापलंजयव्रीडयावध्रवीहृदयगहगुप्तं
प्रकटयन्निजनखरशरचयैरसमशरमिहजयसिह
तभारुचितं ७ याकोअर्थ रुचिरसुंदरकौमारदशाच
पलता ताकरिकेंजीतीहेलज्जा ब्रजवधूवीकेहृदयरू
पीहाघराविषेंगुप्तछिपेहे गुप्तकरतहो आपुनेकर
कसनखकोंमकेबाणकेसमूहकरिकें यहअसमस
र कंदर्पकोजीतोगो हृदयविषेंजोआगेंभावीहोनहार
हे चित्तकोंजीतोगो ७ घोषसीमंतिनीविद्युद्घनएक
लनिनदग्गर्जितस्वमिहसततं बचनकरुणाकूलदृष्टि

अ.टी. बर्हिरंगानवजलदमपिकुरु सुहसितं ८ याकोअर्थ
घोषसीमंतिनीजो ब्रजसीमंतिनी हो विद्युतलता उदय
भई और वेणुमधुरअव्यक्तकोनाद सोई गर्जितमेघ
रूपहे सोतुंमयहनिरंतर वचनोंमत करुणा दयाक
रिकें और गूढअभिप्रायपूर्वक दृष्टिकीवृष्टिवरषाक
रतहो जोयाकेआगेंमेघसोंकहाहासीहे ८ श्लोक अ
न्वहसितंप्रीतमगुरुधातुचेजेगुः प्रियमुदिताः पांसः
स्ताभुसवो कालिंद्याभूरिआगपास्ताः ४९ याकोअर्थ नि
रंतरयाप्रकार आपुनेंप्रियतमप्राणनाथकोंउरधातेहें
वजातअत्यंतउच्चस्वरकरिकें ऊंचेस्वरकरिकें गाव
लभईहे सोयाप्रकारसवकों [illegible] श्रीकालिंदीजूविषेंसो
नकरिवेकोंजातभई बहोत [illegible] भाग्यनिधिहेलसुंद
रीकुमारिका ४९ श्लोक स्नानं तासामंगोपरिपतदम
लांबुकाविधाः प्रेमा[illegible]नोग्य प्रवालं वकासकम
लाह्नि ५० याकोअर्थ [illegible] स्नान विषेंते व्रजभक्तनकेश्रीअंग
ऊपरपर[illegible] स्नानमें [illegible]जलश्री कालिंदीजकोसो के सो
लागतहे अ[illegible]प्रेमपूर्वक करिकेंआईहे सोनंदसूनुरूस
केस्यामअंगकी [illegible] पूर्णकमलासीहे सोकमलनयनी
विशेषणसोभतभईहे ५० श्लोक नवकुचकुंकुमरंजित
यमुनाजलचलनमेत दृगेषु भेदहरिकरकमलप्रोंछ
नलसीसरोजाक्षिः ५१ याकोअर्थ नूतनकुचकुंकुम
करिकेंरंजितरंगीतजोश्रीयमुनाजलकीरमीरितता
कोचलनसुंदरकेअंगविषेंजानेंभेद भजतहे श्रीठा
कुरजीकेकरकमलकरिकेंपोंछिवेकोंलसीश्रीआईहे
मानों हंससरोजाली ५१ श्लोक तद्वायदासीकुचकुंकुमे
नसरस्वतीतत्प्रभयाचगंगी तत्कामितार्थप्रदताहिप्र
त्वावेणीत्वतसत्रकलिंदजायाः ५२ याकोअर्थ तबजोभ

योकछुकुचसंबंधीकुंमकुंमकरिकेंतोसरस्वतीआरक्त
होतभईहे औरब्रजसुंदरीकुंमारिकाकीगोरप्रभाक
रिकेंतो गंगाहोतभईहे औरकालिंदीजूस्यामकरिकें
उनकुंमारिकाकीकामनाकोअर्थप्रकर्षेणदेवेकोनिश्च
ययुक्तत्रिवेणीहोतभईहें सोयुक्तहीहे ५२ श्लोक तड
सपूर्णयमुनापानीयंपीतमुक्तंभावे ततक्षणमुदी
पयतिप्रियसखीखीनंदात्मजेरसिके ५३ याकोअर्थ
तेरसकरिकेंपूर्णे सोरसकोनसो जोकुचकुंकुमक
रिकेंसरस्वतीहेसो तिनकीप्रभाकरिकेंगंगा औरश्री
कालिंदीजूकरिकेंत्रिवेणीभईहे सोकामितअर्थदेवेको
तयाजानिमिलयहव्रतआचर्णकीनोहे तथाश्रमसम
दजलाएभिः रसकरिकेंपूर्णअथयमुनाजीकेपानीकुं
जितनपानकीनोहे ताकोतहीक्षणमात्रकोंपरमउ
द्भटउत्कटभावउद्दीपनकरतेहे हेप्रियसखिरासि
कसिरोमणिनंदात्मजविषे तासंगउद्दीपनभावको
उद्दीपनकरेहें ५४ श्लोक कदाचिद्गोविंदप्रणभरिता
पूर्ववदिमाः प्रगात्यात्वंसद्याप्रियसखिसमागत्यमुदि
ताः सममप्रष्टेनप्रियसखिविहर्तुंस्ववसनं तदेनि
स्थिताव्रजयुवतिविजकूस्थिरजले ५५ याकोअर्थ कद
चित्कश्रीगोविंदकोंअत्यंतप्रीतिकेंअतिशयभयकरिकें
पहिलेकीनांईयहकुंमारिकाप्रकर्षेणउत्कंठेगानकरत
नदीश्रीयमुनाजूको हेप्रियसखिहर्षानंदयुक्तसम्प
कआयकें अपनेंप्राणकेंकूंप्रेष्ठतमकरिहीसाथहें
प्रियसखि प्राणप्रेष्ठतमकरिकेंसाथविहारकेलिकरि
वेकोंआपुनेंवस्त्रकों केसेहेंवस्त्र जोतावस्त्रकरिकें
श्रीठाकुरजीसोंसम्बन्धहोइगो सोयाअभिप्रायकरिकेंदू
सरीवारसखिपदकोप्रयोग तातेंदूरआपुनेंवस्त्रको

ब्र॰टी॰ श्रीयमुनाजीके तट विषें डारि करिकें कमलके समूह ध
नु स्थिर जल विषें निःसंक गगन विहार करत भई ५४
श्लोक तत्कुच कुंकुम वपुषोः प्रभया रस्मित श्रिया च त
दा यमुनारूप मरूप्यं सम भद्र सरूपता हि यतः ५५ या
को अर्थ जब तिनके कुचको कुंकुम और तिनोके वपु श
रीरकी प्रभा कांति करिकें प्रसरत हे फलत हे और मंद
हास्यकी लक्ष्मी सोभा हू प्रसरत हे तब श्रीयमुनाजूको
रूपको अरूप्य अनूपम सम्यक होत भयो हे सो यातें लि
ख्य परसरूपता होत भई ५५ श्लोक कुरु कमलेन तदं
भः परिषिंचत्यः परस्परं हृष्याः विरलान्पृथुल विंदूमि
रं दुबदन्यो विरेजुस्ताः ५६ याको अर्थ ते ब्रजसुंदरीया
पुनें कर कमल करिकें ता[illegible] परस्पर[illegible] हे सो श्री यमु
नाजल हर्ष संयुक्त परस्पर अभिषिंचन करत हे सब
ओरतें छिरकत हे तब विरल[illegible] पार छोटे अरु ब
डे बिंदु करिकें चंद्रवदनी[illegible] हे सो अत्यंत सोभित भई
हें ५६ श्लोक यमुनांबु प्रतिबिंब स्यामा गगन भ स्फुरोजक
नकाद्रि [illegible] विंदु ज्योतिश्चक्रं विचित्रं परिभ्रमति ५७ या
को अर्थ श्रीयमुनाजलको स्याम प्रतिबिंब करिकें स्याम
अंगकी आकास [illegible] अंगकी स्याम आभा को उरोज दोऊ
सुवर्णके पर्वत विषें आगें पाछें सर्वत्र फिरिते जो छो
टे बडे जलके बिंदु हे सो जानें आकास में सुवर्णके मेरु
पर्वतके सब ओर विचित्र तारा साये हे सो ज्योतिश्चक्र प
रिभ्रमण करत हे ५७ श्लोक श्रीकृष्ण संगम प्रोद्यत्कुम
स्वेदांबु संतति विंदवः सूचयंत्यग्रे भाविनी राधिकासखि
५८ याको अर्थ श्रीकृष्णके संगम करिकें प्रकर्षेण करिकें
उदय होयगो जो रति श्रम स्वेद जलकणिका संतति पर
परा सो ए विंदु जमुनाजलके आगें जो भावी होनहार हे

सोसूचनकाकरतहैं हेराधिकाजूकीसखीसंबोधन ५८
श्लोक कुमारिकांगमनेबिंदुतारागतोदय: श्चिरात्
सर्वंप्रश्नपसूच्यत्युदयसखि ५९ याकोअर्थ श्रीकुमा
रिकाकेसंगरूपगगनहै सोआकासविषेंबिंदु स्मरस्व
मजलबिंदु अथवाश्रीयमुनाजलबिंदु यहतारोकेस
मूहभएहैं सोतोजानीयतहैजोवेगिरिकरुणचंद्रकोउ
दयसूचनकरतहै सोतारानिकसतलावेगिरिचंद्रकों
उदयभयोदेखोहैसखी ५९ श्लोक बदनेंदुस्मितसु
धापानेंकुचचकोरयो: प्रस्कन्नाबिंदुवोगंधुराजतेहैंति
लीदृशा ६० याकोअर्थ श्रीस्वामिनीजूकेबदनचंद्रतेंस्मि
तसुधाजोचुवतहै ताकेपानविषेंलवलसोदाऊचक्को
रहें बदनइंदुस्मित सुधापानकरतहै कुचचकोरके
मुखतेंउफरिकेंजूपड्योजोसुधाकोबिंदु सोमृगनयनी
केअंगविषेंकुचतटकेअग्रभागकेविषेंसोभायमानबि
राजतहै ६१ श्लोक मेमेविहारमत्कास्त्वंप्रेष्ठेकृतालो
सु तत्राजगाममहाकेब्रजराजसुतोव्रतस्यसंपूर्त्यै ६२
याकोअर्थ निजकामालनजलविहारकेप्रतिज्ञापश्चा
त्राक्तिविषें याप्रकारश्रीप्रभुनेंप्राणप्रेष्ठएकतापश्च
नस्थलाविषें तहांआनयत्रानयमत्तगजराजगतिलटक
तचलतश्रीब्रजराजजीकेसुतकृष्णआये कुमारिकाके
व्रतकोंसम्यकसंपूर्त्येनिमित्तआवतभएहैं ६२ श्लोक
विकसद्वदनविलोचनकमलयुगलकांतिमधुरमधुर
पूरै: तदपांगारसपयोधिपूरोपकामान्सुसंगमपय
नू ६३ याकोअर्थ श्रीठाकुरजीआपुकेसंगआएहैं विकसि
तहैं प्रफुल्लितलोचनकमलतादृशबदनतेंबिगलित वि
चुवतचुचातहैं कांतिमधुरंमधुरं मधुरधाराकेपूर
करिकें औरलोचनकेअपांगकटाक्षरसामृतकेआगा

ब्र·टी· धसमुद्रविषें अशेषअपारकों मनों विषें सम्यकमिला
प होइगो। संग महोइगो ९२ श्लोक गोपीमुखांबुजसुख
मामधुपालुभिर्वात्सकैडलिभिः यमुनानिलनीलोन्न
तचलदलकैरखिलमानसानिहरन् ९३ याकोअर्थ श्री
गोपिकाजूके मुषकमलकी सोभारूप मधुपिवायवेकी
नांई अत्यंत उत्सक होइ करिकें एतादृशाउत्साहयुक्त
भ्रमर करिकें श्री यमुनाजी संबंधी अनिलवाइ करिकें
लीला करिकें ऊंचेकों चलत हें सो अलकके रापास हें
सो ताकरिकें सबकाहूके मन कूं हरत हें श्रीठाकुरजी
९३ श्लोक पीतांबुपरिधानः कुंकुमललितातिरुचिरकं
दस्रक् सिंजहसनानूपुर मथरगतिः स्निग्धतरतारः
९४ याकोअर्थ श्रीठाकुरजी कैसे आएहें सो पीत
वस्त्र पीतांबर पहिरें केशर कुंकुमसों रंजित ललित
मनोहर अतिशय सुंदर कुंद पुष्पकी माला पहिरें कुंद
कों मोदी पन पुष्पहें और कूजत हें, क्षुद्रघंटिका और
नूपुरसों शब्दायमान गतिः स्निग्धतरतारसवद्रें
रसनां और नूपुरकों ९४ श्लोक मंथरचरणन्यासैरे
तद्भतनियमभंजइति बुद्धिं संमर्दयत्स्वभावं स्वभाव
तोयद्विरहारादि ९५ याकोअर्थ के संध्यावत भए श्रीठा
कुरजी मंथरहरूएहरूए चरणकों न्यास धारिवेकरि
कें इन ब्रजभक्तकुमारिकानके व्रतकों नियमकों भंग
याप्रकारकी बुद्धिकों दूरि करत हें सोसंमर्दयत दूरि
करिवेको स्वभावकों ज्याते सहजस्वभावात्तही विहारआ
दिहें विहारको स्वभावही एतादृशाहे ९५ श्लोक विवि
धालापनिरक्षणलीलानुराधरसविश्रीपसा अनु
भूत्यैसाविलासांस्वस्पांपिदावयरूपयुतः ९६ याकोअर्थ
विविधआलापगान और निरीक्षणसाभिप्रायचितेवोली

ला विषें अनुराध हे सो रस विशेष को है हे सखि पाछे ये
नुभूत्य अनुभव करिकें तेकुं मारिका व्रजभक्तन कों
आरलाप श्री ठाकुरजी आपु फूल कों अनुभव होइवे निमि
त्त हे तब वयस्य पस हित श्री ठाकुरजी आए श्री ठाकुरजी के
उदरास्थित बालक जो पूतनां ग्रसित आपु मेली नहे ता
कों बाहिर निकासि सायली ये है वय वयस्य पयस्य पुत्र आ
ये है ९६ श्लोक अतितुष्टः सर्वस्वं सर्वं सदास्यामीत्यालि
गोपिकभावं दर्शयितुं कतिपय निज सखी भिर्निर्दोष
हृदये सः ९७ याको अर्थ कुलकं श्री ठाकुरजी आपु अति
शय संतुष्ट होइ करिकें मैं सर्वस्व आपुनों देउंगो है आ
लि सर्वस सकों देउंगो या करिकें गोपिकांतकें भाव को दि
षाइवे कों कतिपय निज सखि भिर्निर्दोष हृदयैः शः कु
लकं याको अर्थ ९७ श्लोक प्राग्जन्म पुरुषत्वात्स्वध
र्मोत्पि वयस्यपतं प्राप्ता[illegible] संबंधे सूचयन्नह
रः ९८ याको अर्थ [illegible]कुमार के जन्म के याते पहले जनम
के पुरुषत्व आ[illegible]धर्मोऽपि यह वयस्यता कों प्राप्त भए
हे यह उदरास्थित बाल[illegible] बाहिर काढे हें सो इन वा
लकन साथ आवतें[illegible] श्री ठाकुरजी आप संबंध कों स
चन करत हें ९८ श्लोक यज्ज्ञान ज्ञमुनीनापि प्रियतमा
न्न कृत्वात्रै संगाग तः संगेस्थापयति स्वचक्रमधुना
चाप्याय पत्यं नुदाः तेनाहं सखिलत्वये त्रिभुवनेय
स्मिन्महानुग्रहस्तास्मिन्न्योपपानितं विनीत्वम चिरालं
त्तो प्रियः प्रायशः ९९ याको अर्थ जे को ऊ श्री ठाकुरजी आ
पके केल मधुर वेणु नाद ग्यान को समझत हें ज्ञान ला
दें एतादृश मुनीश्वर कों हूं श्री ठाकुरजी आपु ने प्रियत
म कों करिकें इहां श्री वृंदावन में भृंगागना भ्रमर की
भृंगना भ्रमरी करिकें आपुने संगस्थापत हें आपु ने

ब्र॰टी॰ संगस्थापिकरिकें अपनेंश्री मुषारबिंदकोमधुरूप्या
समंतात् पिवावततहे यहतीसरोअधिकाररूपसेवा
उपयोगीदेहफलदेततहे मुनियनकोंपद्मलीकोंअवला
रहें वृंदावनमेंदे लीलाअवलोकनसेवायहजोश्रीठाकु
रजीश्रीस्वामिनीजीकोंकामोद्दीपनविभावगुणगांनसगु
णभाषणादिकसेवाकरततहे यहत्ताद्रशात्लीयफलदे
नकरतहे ताकरिकेंहेसखि भेलदाणाकरतहूं त्रिलो
कीविषेंज्याविषे परमलमअनुग्रहकरतहे ताकोंघोष
लितंविनी त्वंबेगिहीप्राणप्रियकलोहे बकधावक्रत
प्रकारघोषनितंविनीत्वंगोपिकाकेंकतोहे ६९ श्लोक
ततःसत्वरमेंतासांवासांसिजगहेस्वयं अंतरायासहिष्णु
स्वप्रियाणांनंदनंदनः ७० याकोअर्थ तदनंतरयहकु
मारिकाजादिनवस्त्रतीरविषेंधरिकें विवस्त्रहोंइश्री
यमुनांजीमेंन्हाइवेकोंप्रविष्टभये सोश्रीठाकुरजीआ
पुवेगिहीयहब्रजभक्तनकोंजु स्वश्रीठाकुरजीआपुले
तभए सोकाहेतें नंदनंदनश्रीपुरुषोत्तमश्री याकोबीचव
स्त्रकोअंतरायके सोसह्यनाहिंभयेताते ७० श्लोक त
दायत्कालिंद्याभिजलरूपतःकेलिसचिरांतरायोनोहूरे
पिप्रियसखिरूपतासुनरचिलात् ततोमन्येतस्याःस
ततमनुराधःप्रियतमादपिश्रीकृष्णतप्रियतमवधूषु
वसहजः ७१ याकोअर्थ तबयातेंश्रीकालिंदीजूनेंजो
आपुनेंजलकरिकेंकीनीजोसुंदरलमकेलिहे सोतातें
प्रसंन्नहोइजलकोअंतरायनाहीहे सोदूरिविषेंहूंहेंप्रि
यसषीजलकोअंतरायदूरिनकीनोंहे सोब्रजभक्तनवि
षेंवऊतकाललों तातेंमेंजांनतहूंजो उनब्रजभक्तनपें
कोंनिरंतरअनुराघकोंनमांनतहे सोहेप्रियतम तेंहूं
श्रीकृष्णतेंहूंतेंप्राणप्रियतमब्रजबधू विषेंही सहजअ

नुरोधसंकोचहे आपुनीसजालीहे तातेंश्रीठाकुरजीश्रा
पतेंहू उहबधूकेंअनुरोधसहजहे, ६१ श्लोक उद्भि-
न्नारुणवस्त्रवयुगलमध्यस्यातिरुचिरबनकुसुमे-
प्रकटामलपरिमलनरमदालिजुष्टेमनोहरणं ६२ या
कोअर्थ उद्भिन्नकहे आरक्तप वस्त्रयुगजोडाताकेम-
ध्यस्थित अतिशयसुंदरहे मनोहरनूतनकुसुम-
करिकेंप्रकटभयोहे सोनिर्मलपरिमलकोअतिशय-
भरहे सोताकेमदकरिकें उन्मत्तभ्रमरकरिकेंसेवि-
तकरिकें मनकोंहरणकरिकेंलेजातहे ६२ श्लोक र
समयश्चापिसपोत्पुलकन्नलांडकुचुमसरवपुषं आ
दिपुमांसमिवालिसुतिगणसंगीतमाहात्म्यं ६३ याको
अर्थ यहकदंबनहोइ ताकहेहें त्वहरसमयश्वपि
हे तेपरमन्नलररसश्वपितेंप्रोजैको पुलकरोमांच
न्नलांडकुसुमपुष्पअसंख्यावपुष शरीरकेसोहे आ
दिपुरुषसमानकीनांई आलिरूपसोश्रुतिगणतेंस्तु-
तिसमूहयाकोसंगीतमाहात्म्यकोंगावतहे ६४ श्लोक
आकर्णाकर्षणप्रकटितनूतनवकुसुमचापनिचयेषु
संधितकिंजल्कश्रातलिवापूर्वकंदर्पो ६४ याकोअ
र्थ याआदिपुरुषनेंयोमंडलनूतनकुसुमरूपचापध
नुषकेसमूहविषेसाधेकिंजल्कजोकेसरियारूपशरवृ
त वालाकेसमूहकीनांई यहकोऊअपूर्वकंदर्पहे, ६४
श्लोक किंजल्कोदग्रांगुलिकुसुमकरेर्दलुमखिलगोप्य-
र्थान् आस्थितमिवसुरविटपिनमारूढेमाधवोनीय ६५
याकोअर्थ आदिपुरुषन्नलकेरूप कदंबपुष्पकेकिंजल्क
जोकेसरासोईमांनउंकुसुमकेहस्तकीअंगुलीकेअग्रभा
गपेरूवाहें मांनउंताकरिकेंसकलगुप्तरअर्थकोंदे
वेकोंजांनेंठाढेरहेकीनांई सुरविटपि कल्पतरू एताद

राकल्पद्रुम पर आस मंतात आरोहण चढत भए माधो
नीयको ७५ कुलकं श्लोक पुष्पित श्चित्र नीवीभिः फलि
तं नंदसूनुना सौंदर्येण मधुस्त्रावी पर्यगासीत्तदा तरुः
७६ याको अर्थ वह व्रजरूप कल्पतरु विचित्र नीवी जो
गोपीजनकी कदंवकी सामासौ राखी है यही मानो पुष्पि
त भयो कल्पतरु और ताकरिकें नंदसुत चले ताकरिकें
फलित भयो है सो तादृश पुष्प फल करिकें एक सौंदर्य
माधुर्य लावन्य कमनीय करिकें तो मधुस्त्रावी सौंदर्यामृ
त तें सोही सोध प्रवाह करन लागे सर्व ओर एतादृश हो
त भयो तब तरु ७६ श्लोक सुधावर्षा व कुसुम किंजल्क
गैः कुमारिकाः प्रवत इव बाल्येषु [illegible] तकमयं वभौ ७७
याको अर्थ एतादृश कल्पतरु पुष्प सुधाकी महा वृष्टि
करत हो है और पुष्पनके [illegible] किंजल्क है ताकरिकें जो
नें कुमारिकानको [illegible] श्री ठाकुरजी के आंनि वेको प्रवृत्त
भये कीनांई है सो यह कल्पतरु के पुष्पके किंजल्क होत
भए है मानो श्री ठाकुरजी आपके निकट बुलावत हैं
७७ श्लोक आरोहणाय संगात्कंपित ईव श्रीतकरैर्लभ
रैः खिन्नः नवकोमल किंजल्कैः पुलकित इव सर्वतोरजे
७८ याको अर्थ जब श्री ठकुरानीजी यह कदंव पर आरो
हणाविषें आंएं प्रिय श्री ठाकुरजीके संगतें सब कंपित
कीनांई है और स्त्रीत्वके कलीका के भारि करिकें खिन्नः अस्वे
द भयो और नूतन कोमल किंजल्कके सरा करिकें पुल
कित रोमांच कीनांई सर्वतः सब ओर लें किंशोषेण आशो
भित भयो है तरु हूंको सात्विक भाव विभाव के चिन्ह भए
७८ श्लोक तद्वयस्यस्तथैवाली हृतार्थो अपितेर्भकाः व
यस्यताफलं स्वस्पतद्भावेदाममंसत ७९ याको अर्थ तब
यरूप जो श्री ठाकुरजी ने पूतनास्तन्यद्वारा आपुमें लीनें ते

ताकोसी है हेंस्मालीकृतारथ्यक्रुहे तेबालकवयस्यतोजुते
वयस्परूपताश्रीठाकुरजीकेसमानवयहै सोताकोंपरमफ
लकोंप्रापहूं गोपिकाभावविषेंजेसेकुमारिकाकोंस्माभा
वविषेंजेसोकुंमारिकाहासमर्मसल सांमर्थकोंमांनतहे
७९ श्लोक व्राति विस्मितमनः सखिमुग्धातिस्निग्धसजल
दृष्यालत् प्रियबदनंपस्यतोमम्मैागना: प्रेमांबुधावासन्
८० याकोअर्थ ऐसवकुंमारिकाअतिशयविस्मितमनसः
भई मनतेंअतिशयआश्चर्यहोतभईहे सोहेसखीअति
मुग्धअतिस्निग्धअतिस्नेहकरिकेंसचिक्कणसजलहे
दृष्टिदृष्यकरि तेकुंमारिकाप्राणप्रियकोबदनकमल
कोंदेषतहीप्रेमजलसमुद्रकेंमें मग्नहोतभई ८० श्लो
क तद्वशामनुभयतत्परस्परं ... कृतार्थतथा
जातानंदलरएपहसकृ... ८१ याकोअर्थ
भावमेंहीसुरतांतरस ... करिकें तवकुंमारि
कापरस्परकूं प्रकर्षण ... करिकें आपुवीकृतार्थ
ता याकरिकें ... आनंद ताकेंअतिशयभर
करिकें प्रकर्षण ... बदनहोतभईहे सोयातेपुलि
गहे तेवयस्परूपवालकहे ८२ श्लोक तंनिजचरितसह
चरिकौतुकमिवतेषुबाधयिन्गोपी: कुटिलप्रबोधम
सहतेरहसदमंदमानंदः ८२ याकोअर्थ हेसहचरिले
कहे तेवयस्यबालककेचरित्रकौतुककीनांईहे सोउन
बालकनविषेंश्रीठाकुरजीबोधनकरतहे जोयतुम्ह
रपुरुषार्थहे सोगोपीजनकोंबाधनकरतहे तिनके
हाथमैंकुटिलप्रबोधनकरिकेंश्रीठाकुरजीआपउनसोंब
डातहीहसतभए आनंदकरिकेंबालकऔरश्रीठाकुर
जी ८२ श्लोक मूर्ध्निपतंतीमोहनमुरसिवपाटीरलेप
मुक्तपश्चात् स्मितवसनंसखितासांचकासहसप्रभा

व्र·टी· लस्य ८३ याकोअर्थ व्रजभक्तनके मांथेपर परतहेमोह
नी ओर उरस्थललगायोहे चंदनकोलेपकीयोहेपङ
तही तापाछेकुंमारिकानकेस्वेतबसनहोइगएहे हस
पितेसबव्रजभक्तश्रीठाकुरजीकेउज्वलहास्यकीप्रभाको
तिकरिकेंव्रजभक्तसोभितभएहे सोश्रीठाकुरजीआपस्व
तहहास्यकीप्रभाकरिकेंमोहनरूपहोतभयोहे ओरजोंने
स्वेतवस्त्रपहरेहे सोश्रीठाकुरजीकोस्वेतहास्यमाथेपर
पर्योहे सोजातेंतोमोहनभयोहे उरस्थलविषेंतोचंदन
कोलेपभयोहे सोतापाछेस्वेतवस्त्रभए ८३ श्लोक प्रस
रतिकौमुदीकोटिविलक्षणरुचातदा चकिताइवमुग्धा
स्यःसहसेदंतमाधवं ८४ याकोअर्थ अवश्रीठाकुरजी
आपकेतादृशहास्यकीकौमुदीअसंख्यातकोटिजुन्हेया
प्रसरी तबतोविलक्षणकांतिहोतभई तादृशहास्य
कीकोटिजुन्हेयाकिरणकेंमुग्धाहीकुंमारिकाचकि
तकीनांहीहोतभईहे सोसहसामाधवकोंदेषतभईहे
८४ श्लोक प्रियदर्सनात्संमुखलज्जातरलासितेक्ष
णामुग्धाःसत्यक्तिताःस्वनीवीवीक्षान्योन्यंमुदाकृपन
८५ याकोअर्थ प्राणप्रियकेदर्सनकोंअत्यंतआर्त्ति ओर
सनमुखलज्जा ओरतरलचंचलअसितेक्षणस्यांमक
टाक्षमुग्धाःसुंदरतदनंतरतेश्रीठाकुरजीनेंआपुनी
नीवीजोतीरविषेंडारिकेंजलमेंपैठले सोनीवीश्रीठा
कुरजीनेंपरिहरणकीनीहे सोहरिलीनीदेषिकरिकें
व्रजभक्तअन्योन्यपरस्परहर्षसोंदेषतभई ८५
श्लोक सहसात्यागात्कुपितव्रीडावेशादिवेपदरुणाक्षीः
सास्मितमुखीरवोचत्परिहासमुदारलीलःसः ८६ या
कोअर्थ सहसावस्त्रकेत्यागतेंश्रीठाकुरजीकेंसहसा
वस्त्रकोत्यागकरवायोहे सोआपुहरिलीनेंहैं तातेंतोव्र

ज भक्त कु पित भए है और जल मेंन मग्न है तातें तो लज्जा को
पन्ह और लज्जा के आवेश तें कीनी है कछू कयो डीसी अरु
णाही आरक्त नेत्रवती है सो और सस्मित मुषी में दृहास्य
हे जो मुसि का ति हे एता दृश श्री अत्यंक श्री ठाकुर जी आपुप
रिहूं स जदार लीला सहित करत भए हैं ८६ श्लोक यद्यपि
निर्भर भावान्न देह स किंकुत: पुनरगीत आसां तदपि हसिये
सह ते सखि तन्महचित ८७ याको अर्थ यद्यपि यह ब्रज
भक्त कुमारि का निर्भर अतिशय भाव तें आपु देह हू को
अनुसंधान नांही है तो बड़ सी तकें अनुसंधान क
हां तें होइ यह ब्रज भक्तन को हू तातें श्री ठाकुर जी आपुह
रिहे है सखि सो बड़ो ईआश्चर्य है ८७ श्लोक अत्र गत्स
विचित्र वस्त्र म बला: स्वस्व विदित भयाद संत इतभा वित:
फल मिव प्रीतेन ग्रहाण त्वं दं मयोनामकी वा गुदेति कथमप्य
त्रार्भका: साहिताम स्व वासो भि दत्ता स्य हे प्रियतारंको वा त्रव संश
य: ८८ याको अर्थ हे सब बाला तुम सब आइ करिकें अलौकि
क विचित्र वस्त्र तुमने अपुने विशेष एजानि करिकें ये
मोकरि दीये अब के ल वस्त्र नांही हें किंतु तुम्हारे तेव्रत
भाव हें न हार फलकी नांही हे व्रत को फल हूं मेदीनो हे ता
तें यह फल रूप वस्त्र तुम ही प्रीति करिकें ग्रहण करो यह
मो तें कबहूं कछू कहन तजूं ठि नांही बोल्यो इहां ये बालक
साक्षी हे में आपुनो प्रियतर वस्त्र तुमको दें उगो तो इहां तु
म्हारे वस्त्र देवे में कहा संशय है ८८ श्लोक अभिसारि लंप
वरामिव सपदि जलं चैतदपर लंगात्तु जल भर मुक्तं नूपुर
मपि मधुर वरण चसकलयतु ८९ याको अर्थ हे अभिसारि
णी वस्त्र कीं नांही हें अबला लाल जल कूं छूय हतें दूरि कर
तो आपुने संग तें और जल के भरक करिकें मेरे अवर्ण कोस
फल करिकें धुंनि सुनाइ करिकें ८९ श्लोक वसनादान प्र

व्र॰टी॰ सरक्षाकूस्फुरदमलवलरलीतानि अपियादखिलदृगा॰
मप्यमुभौनिरसंतुरसितानि ८० याको अर्थ वस्त्रको आच्छा
दनसो लेवेकूं प्रसरत हे जो वाकूं तब फुरत हे तह निर्मलच
डीको रणत्कार शब्दायमान ताकरिकें वेगिही सब दसा ओके
कूं अशुभ निरसंतुकूं रहो और रसिता निलुं मकूं बोलो
८० श्लोक अहह किय दूतकापप सम भूदितिसहजसख्य
वात्सल्यात् तरलकरैरभिमर्शत्यंगानि मङ्क्षु प्रियेषांव इ
याको अर्थ अहहव कूतखेद करिके कहत हें जो हाइहाइय
ह ब्रजभक्त ब्रतकरिकें कहत हें बकूं तकूं वरी भई हे सो प्रका
र श्री यमुनाजीकूं सहजसजातीय सख्यकी अतिशय वात्स
ल्यतें आपने तरलतरंग रूप हस्तकरिकें बारंबार व्रजभक्त
न के अंगाको अभिमर्स करत हे संवाहन करत हे सह
लावत हे यह प्रिया श्री यमुना सुमन रेअंगाकुं ८१ श्लो
क व्रतकर्शितमंगं स्वतरं[illegible]कराग्रै हितमस्तौकपरोः
आप्यायपितुं यमुनाभिवस्वकुरागतावकूधा ८२ याको अ
र्थ श्री ठाकुरजी ब्रजभक्तनको कहत हें जो यह तुम्हारे
अंग व्रतकरिकें दुबरे भए हे सो आपुने तरंगरूप जो के
र हस्तको अग्रभाग हथेली आंगुली करिकें आहितकरे
धरयो रात्र मतके आघके गीको समेह करिकें सो बहोत
ही प्रकार आप्यायकरिबेको श्री यमुनाजी अत्यंत अनुराग
करिकें सिंचन करत हे ८२ श्लोक प्रेरयतिस्तीरगत्यै परि
धानाय प्रियांवराणोच भवती स्थिरविभ्रमम स्दलसाली
वीचिकरान्निचये: ८३ याको अर्थ सो श्री यमुनाजी तरंगरू
पभुजाकरिकें मांमां ब्रजभक्तनको प्रेरत हें श्री यमुनातीर
तटकी गति करिकें और परिधान करिकें वे प्रिय अंबरन
को पहरोकूं तुम वेगि विलास करो विलास लसत सो भाय
मों न हो अलआली सो श्री यमुनाजी आपुनी वीची तरंगरू

पहस्तकेसमूहकरिकेंप्रेरतहैं ॥३॥ श्लोक ॥ चिरमिहचर
णांबुरुहान्यंबुनिविमलेचिरेजिरेसरव्यः स्थलकमल
श्रियमप्यपवहंतुहभूमितापानि ॥४॥ याकोअर्थ बहु
तकाललोंयहचरणअंबुरुहनीचरणकमलनिर्मलश्री
यमुनांजूकेजलविषेंविशेषणसोभायमानभयेहें हेस
रव्यः अबस्थलकमलकीसोभाहूकोंतदनंतरबऊतहैं
आरभूमिकोविरहसंतापकोदूरिकरोहो तुम्हारेचरण
कमलबऊतकाललोंजलमेंजलकमलकोसोभायदेतहैं
सोतापदूरिकीनोंहैं तदनंतरस्थलकमलकोंसोभादेभू
मिकोभारदूरिकरो ॥४॥ श्लोक ॥ इयदवधियदीत्यासीत्तदुं
गोपकलिंदजा चरणकमलनीमान्याश्रुहपादयमालसा
सरसिजकुलनीरस्यांतनेवेत्कथमन्यथातदिहमद
भृंगीशोभाधुनिपिवत्वल ॥५॥ याकोअर्थ यहअविधलों
रात्रितेंजोडरपेचरणकमलसोकलिंदजा श्रीयमुनाजी
नेंआपुनेंनीतरराखिजलपरनकीनीहें चरणकोकमल
मोनिकरिकेंअबतोबेगहूजोसोअहृदयकोंआमसोप्राप्ति
भई अबजारखितसमूहस्यावरकेसूर्यविकासीस्थल
कमलकेसमूहनीरकेभूतरहे सोजलकेअंतरकेसहाय
हे सोयाप्रकारअपयत्नसोहोइ तेयहमेरेलोचनभृंगीने
त्रभ्रमरीचरचेणकमलकीसोभारूपमधुकोंपीयतहें
सोपूर्णहेयब्रजभक्तनकेचरणकमलजेहेंमेंतेस्थलमें
आवेतोमेरेनेत्रभ्रमरीसोभामधुपीयपूर्णहोइ ॥५॥ श्लो
क ॥ मन्नयनाब्जविकासः कुंकुमाभरागातिरुचिरनखकिर
णः तरणिरिवोदयगिरिमिहचरणास्तरमनुसरत्वाचि
रात् ॥६॥ याकोअर्थ श्रीठाकुरजीआपुकहतहैं जोमेरेन
यनकमलकोविकासहोइफूलेकुंकुमकोरागआरक्तताअ
त्यंतरुचिरनखकेकिरणजेहेंसोसूर्यकीनांईजेसेउदया

ब्र॰ टी॰ चलतेंउदयहोतहे तेसेंचरणजेहेंसोश्रीयमुनाजूकोत
टकोंअनुसरो तीरकोंअनुसरो वेगिहो विलंबमतिक
रो ९६ श्लोक भयदीयारःसरसिस्मरःकुचकनककल
सिकामेदं भावरसैःपूरयतिस्वयमादातुसतहिलि: नि
सर्गसुखमानीवीविनैकरुचिरांश्रियं भवत्यादधतेंस।
ख्यामह्लिलोचनमाह्लिका ९७ याकोअर्थ तुम्हारोउरस्थ
लसरोवरहे सोकंदर्पको तासरोवरविषेंकुचरूपीसुवर्ण
केकलसहे सोतुमआपुभावरसकरिकेंबहुतपूर्णकर
तहो कलशरूआपुलेलेरसलेवेंतेतरहितहे तुम्हारीआति
न्नायसोभाहेनीवीविनाहीरुचिरमनोहरश्रीसोभाहेरुचि
रसोभाकोभवतादधतेतुमधरतहो सोमेरेलोचनकोमा
ह्लिकमस्करताहे ९७ श्लोक श्यामाश्चापित्रिदशायुव
तिश्चाघ्यसुखमामपूर्वांयां[illegible]मपियुष्मासुकुरु
तेतदास्येमन्नेत्रभ्रमर[illegible]पायतसनान्पयेग॰ह्ल
त्वेकेकशातेउसहैवसु[illegible]खेला ९८ याकोअर्थ यह
जोतुम्हारेआ[illegible]त्रिदशायुवतीजोदेवां
गनानकोंआ[illegible]वियोगपरशोभाहे औरअबको
ऊमापूर्व[illegible]पूर्वजोकोऊएकवस्त्रनकोपाइ
करिकें आपने[illegible]कोंअयसंबोधनआपुनेंवस्त्रको
ग्रहणकरोहो सोतातुमएकशाकेउतसवसायहीसो
घ्रसवकोऊग्रहणकरो ९८ श्लोक अंबररूपभवत्कटि
मवलंबमानःसुरंजनानीमः सपदिविहंत्वेवरलाननग
ववरबीरकृतकवचा ९९ याकोअर्थ तुम्हारीकटिअंबर
आकाशरूपहेंकहेंसून्यालेवीहे सोएताद्रसकटिकोंअव
लंबि यहसुंदरजनअलौकिकनीवीपहरो तातकालही
तुंमवहोवेरतोवहवस्त्रनांहीहे अनंगवरवीरकंद
र्पश्रेष्ठवीरनेंकवचसन्नाहकीनेहें यहपहिरकरिकें

कंदर्पसंग्रामकोंसहजहे यहभावहै ॥८९॥ श्लोक भव
तीषुसत्येमेव श्रियं वदाम्येतदिहतु नोनर्म व्रजनिय
मकर्पितायतकुमारिकायुयमनवद्या ॥ ९० याकोअर्थ
तुंमविषेसत्यहीश्रार तुंम्हारोप्रियकोंकहतहों यहते
यहतोनर्मनांही उपहासनांहीहे सोयातेंतुंमव्रतके
नियमकरिकेंवऊतकार्पितादूवरीहो व्रतनेंमहोइता
सोंउपहासनांहीकरनों तुंमकुमारिकानिःपापनिर्दुष
हो ९० श्लोक इतिनिजनाथनिरुक्तोक्तावली श्रुतदीयव
चसापि संबंधमाप्यसर्वाबाभ्वोऽविषयास्तदाभूवन ९१
याकोअर्थ याप्रकारकेंश्रापुनेंनिजनाथकीनितरांश्र
तिश्रायउक्ताप रिहासकेंसुनिकें श्रीठाकुरजीकेवचन
हूंबचनकोंहूसंबंधपायकरिकें सब[illegible]कोएतादृश
परमांनंदमयाजो बचनकोअनुभव[illegible]यतबहोतभयोहे
जोबचनसोंकह्योनजाय[illegible]यहीनांहीहे ९१
श्लोक तद्वचनचंद्रिका[illegible]प्रेमजलनिधौम
ग्ना तायमुना[illegible]रचनाविंदन् ९२ या
कोअर्थ श्रीठाकुरजीकेवचनरूपीचंद्रिकाकरिजोत्स्नाक
रिकें प्रकर्षेण[illegible]व्रजभक्तप्रेमरूपजलकेसमु
द्रमेंमगनभईबू[illegible]गई तेव्रजभक्तश्रीजमुनाजीकोंनंद
नजश्रीठाकुरजीकोंश्रारविहारकोहूनश्रातमाकों कछून
ज्ञानतभईहे सोएतादृशउप्रेमजलमेंडूबीहे ९२ श्लोक
नेतकेनापिभावेनतास्तदानंदसूनुना ॥ कृतःसाक्षादिव
प्रांघ्रसंबंधाभागपतोभवन् ९३ याकोअर्थ ताकरिकेंको
उएकमहाभावकरिकें तेअनिर्वचनीयव्रजभक्तहे
तबश्रीनंदसूनुकोंश्रापुनेंप्रीतरसात्साक्षात्कीनांईश्रीठाकु
रजीश्रापुप्राप्तभएहें सोसंबंधभागपतोंहोतभयोहे ९३
श्लोक रतांतइवसंजातखिलदाराेसुरतःप्रियं वीक्षाति

ब्र॰टी॰ व्रीडिताश्चासन्नंभोजाक्षिसुमध्यमाः १०४ याकोअर्थ
तवब्रजभक्तनकोरतिअंतरजेसोप्रगटहोतभयोहे सो
सहस्त्रावजेसोअत्यंतविलक्षणउत्कर्षप्रगटहोतभ
योहे तबपरस्परएकेकेकेमोहोंकोदेषिकरिकेंअत्यं
तलज्जावंतीहोतभईहें अंभोजाक्षिसुमध्यमा कमल
नयनीसुंदरमध्यभागजाकोएतादृशीहे १०४ श्लोक
सख्यवैतदुतान्यास्वपीतिविदुर्दिनुपरस्परंप्रेम्ण संप्रा
प्यचसंसंवादंसमभूत्व नुजातहासास्ता १०५ याकोअ
र्थ मोविषेंहीयहतेभावउतअन्यविषेंहूरत्तोतयहवि
शेषलएजोनिकेकों परस्परअन्योन्यप्रकर्षेणलेदेषतभ
ईहें तबसंवादप्राप्तहोतभयोसे सोबातसवनकीएक
मिली तेसमयकेअनुभवनजातहासास्ता: ब्रजभक्तनको
हास्यउपजतभयोहे १०५ श्लोक कौतुकमिवमत्वातत्र
वक्ताभाव्यतोपियोसहसा साखिमाधवपूजाकुसु
मान्यहंमन्ये १०६ याकोअर्थ कौतुकजेसोमानिकरिकें ते
रतातकेंनाटकस्वभावतेंजोआगेभावीहोनहारदेऊ जो
हासतेंब्रजभक्तनकोतांकुंहेसखि तेंमाधवश्रीठाकुरजी
कीपुष्पकरिकेंपूजाकरतभईहें सोयहमेंमानतहूंय
हकुंमारिकाअनेहास्यनांहीकीनोंहें मांनोंहास्यपुष्पक
रिकें श्रीठाकुरजीकीपूजाकीनीहें सोमेंमानतहूं १०६
श्लोक अमुनात्वलोकिकेनप्रियसखिभावेनपद्दृहिर्न
गताः तास्त्वघुत्केयदिमायमुनायांनोरसेकिंतु १०७ या
कोअर्थ याप्रकारअतिअलौकिकभावकरिकें हेप्रियस
खिजोजबबहारनगईतेंब्रजभक्ततेतोयुक्तजातें यह
श्रीयमुनाजविषेंकहारसनांहीहें १०७ श्लोक एवंतासा
मंतर्भावंदृष्ट्वाप्रबोधनायपुननः निजगादनंदसूनुःस्मि
तेनसंमोहयन्सुमुखिः १०८ याकोअर्थ याप्रकारकोता

कुमारिकानकें अंतरभीतरकेभावकों देषिकरिकें मोह
उरतभए हैंसुमुखि १०८ श्लोक मय्यिस्थिताभावन्नी
व्यः प्रागोदविपरीतकं वदंतितन्नयुक्तंहि विपश्चाविल
तःप्रियाः १०९ याकोअर्थ मोविषेंस्थिततुम्हारीनीवी सो
पहिलेंतें नांहीहें सोविपरीतसुरतकोंकहतहेंजो ते
निश्चययुक्तनांहीहें सोतोसांनकूलसुरतपाछेंसेंजहा
रहे रसाधिक्येपुंभावः तातेंहेप्रियाले १०९ श्लोक यद्य
पिभवतीपुतद्यप्युचितंसततलेरसाधिक्यात् रसमर्या
दानेवंभवतीत्यत्रैवगहतांवासः ११० याकोअर्थ यद्य
पितुमोंविषेंविपरीतिउचितहे ताहूउचितनिरंतरसों
रसआधिक्यतेमर्यादारसयाप्रकारनांहीहोतहे सोया
करिकेंइहांहीआइवस्त्रग्रहणोक[illegible] ११० श्लोक सर्वत
प्रसतयाममदृष्टेर्वानिकथमबानिलोपि स्प्रष्टुमर्हति।
नैवभवदंगान्याश्रुततयजतिबालमेराको १११ याकोअ
र्थ अबश्रीठाकुरजीआपकहतहेंजो सर्वत्रमेरीहीदृष्टिप्र
सतभईहे सोमेरीदृष्टिहीसर्वत्रतुंमपरआवतीभईहे
क्योंहूंकरिकेंवयारहूंसेंवेकुंतुंम्हारेअंगगोंकोयो
ग्यनांहीहें तातेंतुमसोंबालकनकोंआसंकात्यजो १११
श्लोक अयमपिसघाणः पवनः शीतमितिपूरागपूरणेन
वनीवीः परिधापयपितुभवती खंवुन्यपिहतसंचरंति
११२ याकोअर्थ श्रीठाकुरजीआपकहतहेंजो यहअत्यं
तदयायुक्तपवनहेंशीतहे यहजांनिकें परागपूरनें
तननीवीपहरावनकूं तुंमविषेंजलविषेंहूं षेदकरिकें
जोआपेविचारीयनकूं शीतलागतहे जांनिकरिकें परागपू
रकीनीवीपहरावनकोंजलमेंहूंसंचरतहें दयाकरिकेंवा
युहे ११२ श्लोक यदिन्नवदभिमतमेततदाहसेवावरूल्या
त्र भवदंगेषुनिजागेरावर्णमुग्धलोचना:करवै: ११३ या

व्र-टी कोअर्थ जोतुम्हारेअभिमतअभिप्राय यहरसताहत्र्यात १८
नतबमेंही इहां नीपकदंबतेंउतरिकुरिकें तुम्हारेअं
गविषें आपुनेंअंगाकरिकें आवलेंकोकरो हेमुग्धलो
चना ११३ श्लोक प्रेमरसांबुधिमग्नेमनोविनोदोक्तिन
वमहावर्ते उरुतमुरूभावभूत्ससिकतमगांगपूरंभ
११४ याकोअर्थ प्रथमतोप्रेमरससमुद्रमेंमग्नभएम
न तापाछेंश्रीठाकुरजीकीनूतनविनोदहे सोपरिहा
सयुक्तनूतनमहाआवर्तभ्रमरवाकेकरिकें ताकरिकें
बरुतहीभावकोटिशः उरुतउदयहोतहेंभये जेसेंसि
कतासहितकीनाईगंगाकेजलकोपूर ११४ श्लोक नर्म
रसोक्तिसमुद्रेमिलितःप्रेमाब्धिर्युद्वेलः आसीतदि
हतदीयंमनोपिवहिरासहसेव ११५ याकोअर्थ श्री
ठाकुरजीपरिहासरसकोउरुकेअनंतसमुद्रकरिकें
तासमुद्रजबव्रजभक्तनकेप्रेमरूपकरणमें दोऊरसअ
संरब्धसमुद्रमिलेज्यानतब्भोउद्वेल: उधाणबहार
उपटचले तबतेंश्रीयकुमारिकासुंदरीयनकेमनहू
ते दोऊरसकेधानतेंयमनहूंवाहरतवहीआवत
भयोहे यहमनताकेसंग ११५ श्लोक तदाप्रियतम
स्यांताःसखिनिरीक्ष्यमुग्धाननं त्रपाहसितभावसान्न
तदृशालिजागान्यपि कलिंदतनयाजलेसुमुखिकंठ
पर्यंतमास्थिता इवतिजांचलेरूणतरेवभूवुर्मुदा १
१६ याकोअर्थ जबव्रजभक्तनकेमनरसकेउधानके
साथवाहिरआयोहे तबव्रजभक्तप्राणप्रियतमकोमु
ग्धआननकमलबाहिरदेषिकरिकें हसपीलज्याक
रिकें हसतिभावहोइकरिकें नीचीद्रष्टिकरिकें आपु
नेंहूंअंगकोंदेषलगईहें हेसुमुषीतबकहाकहतभ
ईहे सोकलिंदपर्वतकीबेटीश्रीकालिंदीजूकेजलविषें

कंठपर्यंत कहिये आसमंतात् आस्थिता की नांई सो कैसे ला
गत हैं मानों आपुने अरुणतर अंचल विषें हर्षानंद
सो होत भए हैं सो श्री कालिंदीजू के जल में प्रविष्ट नांही भ
ए हैं जो मानों आपुने अरुण अंचल विषें होत भए आनं
द सो ११६ श्लोक प्रियतमनखपदानामुदयाय न चिर
णाद्विशिरतरनीरे मग्नास्तपंत इव नवकोकारुरु
चुः कुचास्तासां ११६ याको अर्थ प्रियतम श्री ठाकुरजी के
चरण के नखरूप सूर्य उदय होइवे को बेगि ही करिके सी
तलतम श्रीजमनाजल विषें मगन होइ के नद वकरि तप
स्या करत हैं कींधों नांही हैं सो नूतन कुचरूप कोकया प्रका
र रुरुचुः सोभायमान हैं तिन सुंदरीयन के कुच ११७
श्लोक खिन्नोऽग्रासकथमुभविले नुत्सु [illegible] दृगास्यं द
ष्टा राकापतिरयमुदेत्यस्तिरा[illegible]तिमेला आनीतौत लक
रपतनतो या मुनी येजले [illegible] नु [illegible]नौ कोकाविव नकुचौ
रजतुर्जीतकंपौ ११७ याको अर्थ [illegible] सुंदरी कुमारिका
जल में खिन्न भई हैं [illegible] कहोइगो यह उ
त्सुकता उत्साह करिके [illegible] ता दृश श्री ठाकुरजी के मु
खचंद्र को देखिके [illegible] राकापति पूर्णमासी की रा
ति को पति चंद्रमा है यह उदय भयो है राका यह जानि
के ऐसो मान करिके आसमंतात् भक्त ता राके पति चंद्र
मा के किरण समूह के पतन ने पडिवे ते आसमंतात् ड
रपत भये तब यह की बेटी जो या मुनी के यह जल विषें प्र
विष्ट होय कोका चकवाक के नांई जल में लीन विषें नूत
न कुच विषें सोभायमान के संतें कंपायमान होत भए
हैं ११८ श्लोक किं वर्ण्याभिमम नानीरोपारिलक्रा दखिल
वदनामि मन्ये हं प्रियवरदे पद्मपाधिपानेकसरव्यादि
तान् ११८ याको अर्थ कहा वर्णन करो श्रीयमुनाजी के

व्र·टी· तीरऊपरज्यो भायमांन है अषिलसबके वदन चंद्रमें मो
नहूं जो प्रिय वर देवेको इयाजोरात्रि ताकोंआधिपति ही
के सखउदय भयेहे चंद्रमा सखसहित वर देवेकोंउद
यभयोहे ऐसोमांनतहूं ११९ श्लोक किमिदवोमी बक्र
यभयोहे ऐसोमांनतहूं ११९ श्लोक किमिदवोमी बकुं
तान तत्र हरि प्रसन्न पद्मान्युतनाधुनारविः इत्यतदात
दृष्टनानि सेरयायास्पदन्यभ वेष्चिरम भेकभ्रेजे १२० याको
अर्थ कहायह चंद्रहे नातहायहतोवकुलहे चंद्रमातो
एकहोतहे यहतोवकुतहे तातेचंद्रमातोनहोइ तोव
तकहायह प्रसन्न प्रफुलित कमलहे कहेतहें नाही
अव सूर्य नाही रात्रि हे याप्रकार लबतें सुंदरी कुमारि
काके बचन संशयको आपन वृंद टिको नो होत भयो
हे बकुतकालयो ब्रजकेबालकनसयपस्पविषे १२० श्लोक
तता हास्यस्मेरा ननकमलमालाप्रियमिता विलासश्री
संपज्जिलसदनकोटिशोभव बनु अतिस्निग्धैर्नेत्रैर्द
म भिमुखे श्चालितरलैः सखीहंत्योगोपैः स्वरसमुदितै
श्छिस्मम मुखं याको अर्थ तदनंतर श्रीठाकुरजीकोहा
स्य और स्मेरा हसत्यदन्नानन मुषकमलको यहके
सोआननकमलताकेआस्मात हलन्ता अत्यंत प्रियतम है और
यह विलासकेसहेजो कोटि मदनकी सोभाकोसम्पकजी
तीहे ताके समांनके वदन हे अति स्निग्ध नेत्र करिके
ईक्षणको सनमुष हूअत्यंत चंचल सम्यक देषतयस्य
गोपकरिके गोपनकेदेषतहे सोअपुनेरसआनंदितक
रिकेंबाषितहे सोयह श्रीठाकुरजीहे १२१ श्लोक परमोदा
रतवेद पुत्रकं यदुसनदान माकृत्य तेद्यादिसमयेसफ
लंभवतीतदेवां गसांगत्वात् १२२ याको अर्थ तुंमपर्म
उदारत्तम हो तुंमकों यह युक्त ही हे जो ताते तुंमानिक
टपुलायवस्त्रदांनकरतहो तब दारताजबसमयविषे

सकलहोइ तबही अंगप्रत्यंगनतेहोइ अंगसांगतबही
होइगो १२२ श्लोक तद्दलवस्तुकदाचितकथमपिनाव
लोलप्रयद्गृह्यं तदिहास्माकंनीवीदोसिनोवाननतद्वि प्र १
२३ याकोअर्थ तुम्हारी हरिलीनी वस्त्रकदाचित कवहूंको
हूंन्यारीनांही फिरतहें साथते तातेहमारीनीवीकोहमो
कोंफिरिदेडुगे सोहमजाननतनांहीहें १२३ श्लोक यदि
नैकाकपहतमितिहृदासिनान्योस्मदीयवस्त्रंग स्त्रप्रदुम
पिकोपिसक्तस्तदृखिलमकाकिनैवहतं १२४ याकोअर्थ
तुमएकलेहमारेबस्त्रहरिलेगएहो याकरिकेतुमअन्य
केलईदेउगे नहींअन्यकोऊहमारीबस्त्रहे सोअंगस्प
र्सकरिवेकोंहूंसक्तहे कोऊकोहूंसकतहे तेतुंमसबअ
केलेहीलेगयेहो १२४ श्लोक हरत्यपारकोदृकदानम
पीहांचितंमहोदार नाथान्यथातुससहाननयःसभत्य
युक्तोहि १२५ याकोअर्थ हेमहाराज अपनांकारएकलेह
मारेवस्त्रलेगएहो तातेकाहूएकलेदानहूंयहउचित
हे हमहोहारनहीं अन्यथातातुमहाननं बडोईअन्य
थाहोहोतहे अरुअसमयदुःखरूहोतहे १२५ श्लोक न
हिकुलवधूरन्यसमेकृपावनकुत्र चित्कमपिसरसंसा
गंसाध्वीप्रकाशयतिविभो यदितिमधुरस्निग्धप्राणप्रि
येहृदयोरपिहृद्यामपिनसांमुखंयातस्तदीयविलोच
ने १२६ याकोअर्थ नहींकुलवधूअन्यकेआगेकोहूंके
होहूंकछू तेरसकोरतिरसकोअपुनेअंगकोसाध्वी
प्रकाशकरतहो प्रभोनांहीप्रकाशकरतहें सोयातेअ
त्यंतमधुरअरुस्निग्ध प्राणतेहूंअत्यंतप्रियतमकेई
दृगहूं एकदृगकेहूंसननांहीजातहें तुम्हारेविलोच
नविषें १२६ श्लोक कदाचितरुतीकाचिदृग्मताप्रकाश
येत कथंकुमारिकाःकुर्युःजानंत्योगतयाधुना १२७ या

 कोअर्थ कदाचित्‌तरुणीकोकरकअंगकोजन्मसहोइक 
रिकें प्रकासकरे कुमारिकाकेसेंकरे हेअंगतुंमजोंनत
हो तेसेंअवकेसेंकरे १२७ श्लोक सानंदनंदभूपालकु
मारंप्राणवल्लभं त्वांतुसुंदरजानीमोनीवीदेहिमहाभुज
१२८ याकोअर्थ हेसुंदरतुमआनंदसहितजोश्रीनंदराइ
जूमहाराजाकेतुमकुमारहो पुत्रहो औरहमारेप्राणहूतें
अत्यंतवल्लभहो तातेंतुमकोतोहमजानततहें जोनंदराजा
केलाडिलेपुत्रहो हेमहाभुज तुमहमारीनीवीदेऊ १२८
श्लोक अजेसर्वेत्रैवाखिलबुधजनैःश्लाघितगुणगणैर्बला
मककारिणमुदितमाकल्पंकिमपि कदाचित्कश्चिच्छ्रिन्नःश्रु
तिकटुवदत्यतिभयंखलज्जातोऽयं तेसुभगाहृदयखेदयति
हे १२९ याकोअर्थ अजविषैसर्वेतहां सर्वपंडितोंकरिकें
स्तुतिकरियेगएगुणगणवेसमूहलएकेतुमहीहो अ
वयाप्रकारकेतुमहारेकरणोंजदयजोस्त्रीयनकीनीवीयों
हरिलेगए यहलाकाजायतुमसेंजदयभए सोसुनिकेंक
दाचित्कोअक्षरूदूलाराकौनकोंकटुकहें कोऊवुरोकहे
निंदककेयहलसलमायकरिकेंहमारेसुभगाहृदयकों
निश्चयपदकेश्रावितहोतहे जोमतिकोऊतुम्हारीनिंदाकरे
टोहमकोंदुःखहे १२९ श्लोक तदासुदेहिवासांसिबालुर्येक
निधानभो नोचेदयमुदेत्येवतापयन्नीलनीरजं १३० या
कोअर्थ हेबालुर्येकनिधानप्रभो: ताकारणतेंतुमवेगिही
हमारेवस्त्रनकोंदेऊ वेगिनदेऊगेतोयहसूर्यऊगतहीहे
नीलोत्पलनीरजकमलकोंतापउपजांवनउदयहोतहे
हीसूर्य तातेंतुमवेगिरात्रिहीमेंबस्त्रदेऊ १३० श्लोक नै
वेभवत्यचिनमित्यतिसान्द्रचिंतासांजात्यतःप्रियतमातबभा
नुकन्या: हस्तान्प्रसार्यनिकटेचगतास्यदीयनीवीरानेकं
मललोचनयाचतेस्म १३१ याकोअर्थ याप्रकारउक्तिनो

होहोतहे सोयाप्रकारसार्द्रचितारससहितश्राई चित्तहे
इकरिकें ओरहमारीसजातीयस्त्रीहेंतातें ओरसूर्यकी
कंन्याश्रीयमुनाजतुंम्हारीप्रियतमाहे सोतरंगरूपहा
थपसारिकें तुम्हारेनिकटकोंगाई हेकमलदलदीर्घलो
चन हमारीनीवीकोंत्रानय याचनाकरतहेंसम यहप्र
सिद्धहे १३१ श्लोक त्वदंगसंगतापीतनीवीतडिदिवांबु
दे विराजतेंगासा तत्रसुचिरस्थायिनीनहि १३२ याकोअ
र्थ तुम्हारेहरेअंगकेसंगताकरिकेंहमारीपीतनीवीजे
सेंबीजुरीकीनाईमेघस्यामविषेंविराजमांनसोभियतहे
हेश्रंग सोबिजुरीतहांसुचिरसुंदरविराजतहे यस्थायि
नीनांहीहे बिज्जुरीकहुंस्थाईहोतनांहीहे जोतातेंहमारीपी
तनीवीदेऊ १३२ श्लोक तत्रागतासुललनासंप्रतिचनवर्त
तेविश्रायोत्र यद्यस्तिकश्चिद्धुतन्वनायैतएवातिसुंद
रःस १३३ याकोअर्थ तहांआयेंहुवेंनायेंवोरसांप्राति
अबइहांकछूविश्रायवतानांहीहे कबकिसीपहेंसकछुभव
तोअनुचितहोहे अतिसुंदरतेंर १३४ श्लोक अपरस्त्रीचिन्हं
कितमपिहृदयमास्वीक्षप्रमदा कथमितरपुरुषसक
तमुपगाछेत्तद्दरसांश १३४ याकोअर्थ परस्त्रीचिन्हांकि
तकुंहूंहृदयनाथकुंप्रमदास्त्रीदेषतनांहीहें तोहमके
सेंइतरपुरुषजोवयस्यतुम्हारेसाथहे केसइतरपुरु
षकोतुमसाथकीनेंहे ताकेनिकटहमनगनजाइ हेश्रंग
सोतुमहीकहोतो १३५ श्लोक स्वयमेवांगविचारयसततं
सर्वत्रसर्वतोस्माकं स्वविताऽत्वमेवनाथः किमपरमधिकं
तुकिलाप्य १३५ याकोअर्थ हेअंगतुम्ह्मापहीविचारोजो
तुमनिरंतरसर्वत्रसर्वतेहमारेसवेभावकरिरक्षकतुम
होहो तुमहीरक्षाकरतहो हेनाथ यातेंओरअधिकहम
कहाकहे कहाअधिकविज्ञप्रकरें १३५ श्लोक अयमिति

ब्र॰टी॰ शिशिरः पवनोमनोपिनः सपदि वेपयत्यहति का तुरपिशा
तभरा यंतत्रापितरां मयंसमय १२६ याकोअर्थ यहहेसोअ
त्यंतसीतलवायुहे और हमारो मन ऋतकालकेपापमां
नहोतबहतहे और हेमंतऋतुसंबंधिहुसीतकोराभरहें
तहां ईश्वतिरायसीतकोसमयहे १२६ श्लोक तेनापिवपि
तानांमवुनिश्रुभगोवराणोनोप्रदेहि त्वायितिश्रांताहिद
यायच्छीतप्यवमिहचरसि १२७ याकोअर्थ एताद्रशसीत
लवायुकरिके सोअसंतकंपायमीनहमजलविषे हेश्रु
भग तुंमहमारेवस्त्रदेउ तुंमविषेनिश्चयदयानेविश्रा
मकीनाहें दयासोईगईहे यातेंसीतविषेहूं याप्रकारय
हआचरणकरतहें हमारीनीवीलरहेहे १२७ श्लोक तं
त्वस्मन्नीवीरूलपरिधायाः सितिरतीरस्थाः माभ
वन्वालास्तसोलंपाःसोकुमार्यंविर १२८ याकोअर्थ तुंमतो
हमारीनीवीऊपर[illegible]हें सोक[illegible]जोतीरविषेंस्थितहे
जोबालक वयस[illegible]मतिहोयहे तेकुंमारनवि
षेंतुंम्हारी[illegible]याहे १२८ श्लोक भवामस्त्वदासात
रलतर[illegible]खचालकृतावीताखिलपरिजनाःस
त्यवचनाः[illegible]संवितरवसनानिप्रियततोविधा
स्यामःसर्वेत्वदुदितमरत्पेपयधिजले १२९ याकोअर्थ ह
मतुंम्हारीदासीहोंइगी तुंम्हारेवचनतेंवलकरठाकी
सोभाकेएकलवनेहमेंअखिलपरिजनकोतुंममोलली
यहें हमसत्यवचनकहतहें तातेंदासीत्वकेसिद्धार्थको
प्रियवस्त्रविस्तारोदेऊ तदनंतरतुंम्हारोकह्योहमस
बकरेंगे अरण्यविषेंहू औरजलविषेंहू जलस्थलविषें
१२९ सात्विककेवचन श्लोक जानासि निरिवलसेत्व
नाकर्णयनसदत्रविशत्प्रि नोचेद्व्रजराजाग्रेसर्वंविलाप
यिष्यामः १३० याकोअर्थ तुंमसबमर्यादाजोजानतहो ह

हो तुम हमारी विज्ञप्तिसुंनो औरन सुंनोंगे तो श्रीव्रजरा
जजू आगें सबकों जनावेंगे १५० श्लोक इतिव्रजकुमा
रिकावदनपद्ममंदस्मितप्रकाशगलितामलेरितमरं
दपूरोहितः स्फुटिस्फुदितनिर्भरप्रणयचित्रभावांकुरे
न्नतांगरूहमूरभूरुतिरसज्ञचूडामणिः १५१ याको
अर्थ याप्रकारकें व्रजकुमारिकाके वदनकमलतें मं
दस्मितप्रकाशतें गलित निर्मलप्रेरितमकरंदको पूर
येहितःकह्यो तब स्फुटित उदित है सो ताकालउद्भव
यो निर्भरप्रणयप्रीतिको भर ताकरिकें विचित्रभावकेअं
कुर है तातेंकंचें कूच्यं गरूह रोंमा चहोतभयोहे सो श्रीठाकु
रजी आपुकैसे है रतिरसज्ञमें चूडामणिहैं १५१ श्लोक
सखि निर्भरानुरागात्प्राय विविक्तापिकैकात्म्यं तद
यं तत्छी तैम्भेण सेंनत्यो कंप पुलक स्वेद सीत १५२ याको
अर्थ हे सखी अतिशय अनुरागके भरकरिकें श्रीठाकुरजी
आपु न्यारे बिलगे होयकें एकआत्मकहै एकताकों प्राप्त हो
तभए है सोतातें कुमारिकानसें यहतें सात्विक [illegible] कहा है
सो ताको कंप औरपुलक श्रीठाकुरजी आपुकों स्फुरित भया
है १५२ श्लोक नवप्रेमाईसाकूतप्रौढविनयोक्तिभिः त
द्वराः सस्मितप्रौढभावः स्वकरुणोवदत् १५३ याको अर्थ
नूतनप्रेमकरिकें आर्द्रअपारीसाभिप्राय आपुनी प्रौढ
भावकरिकें विनययुक्तिकरिकें श्रीठाकुरजी तें व्रजभक्त
नकूं वरहोयकें प्रौढभावकरिकें मंदहास्यकरिकेंकरु
णा अतिदयाकरिकें श्रीठाकुरजी आपु बोलतभए हैं १५३
श्लोक गच्छतमाचिरमाखिलं व्रजराजाग्रनिवेदनं वादे
शायदिवदिष्यतिदेहातीमां निनदाप्रदास्यहं १५४ याको
अर्थ तुम जावो विलंबमतिकरो सबहीतें पहिलें श्रीव्रज
राजजी आगें निवेदनकरो जबव्रजराजजू कहैंगे जो इन

ब्र·टी. केवस्त्र देऊं तब मैं देऊंगो १४४ श्लोक अहमपि भव
दुक्त मेव सत्यं सपदि विधा तुम कैतव वदामि यदिहाव
दनागतौ न दानं भवति नवा परिधानमं बराणां १४५
याको अर्थ श्री ठाकुरजी आपु कहत हैं जो मैं हूं तिहारो क
ह्यो सत्य करिकें मानत हूं सो तत्काल लेवेकूं निःकपट
करिकें अछल करिकें कहत हूं जो यह तुम अनागमन
बिषेंदांन न होयगो अथवा नहीं वस्त्रनकूं पहिरोगे इहां
आय बिनु बस्त्र देउगो ऊनां ही नां तुम पहिरोगे वस्त्रकूं
१४५ श्लोक ममैव केवलस्य हद्दास्यो यदि भविष्यथ नत्र
पाधीनता व्यवायुक्ता मप्पुरततदा १४६ याको अर्थ तुम
केवल एक मेरी यह दासी होउगी तो उनकूं लज्जाकी
आधीनता हू न बहीये तो आगें आवनो युक्त है
न केवल लज्जाकें आधीन १४६ श्लोक मद्वाक्यमेव यदि
वः कार्यं तर्हि सुमध्यमा मनविशेषोस्ति मदिच्छैव
वलीयसी १४७ याको अर्थ मेरे वाक्यकी जब तुम करोगी
तब ही हे सुमध्यमा ह्यां समय विषें कछू विशेष नांही है सो
मेरी इच्छा ही बलिष्ठ है १४७ श्लोक दासीत्वेपि म
दिच्छांतिवर्त्तते नवमश्चापः नहीपूरयति मधुव्रतम
धिच्छयात्मवशपत्राब्जस्य १४८ याको अर्थ एक दासीत्व
षेंहूं मेरी इच्छा नांही निवर्त्त होत रमणकी नें विनां यह हे क
मल न यनी नांही पूर्ण होत है मधुव्रत ज्याकुं मधुकी इच्छा
हे ताकरिकें आपनो आत्मा वश्य ताकमलके मधुव्रतनें
आपुनो आत्मा कमलकें बसकीनो है मधुकी इच्छाकरिकें
तो मधुपान बिनु क्योंहूं इच्छाकी पूर्ति होइ नांही है तैसें दा
सी विषेंहूं मेरी रमणकी इच्छा निवर्त्त नांही होत है १४८ श्लो
क ततो धरदरप्रभार स्वित विचित्ररूपस्फुरत् स्थिरामल
जलाश्रया दुपचिताश्रया निर्गताः त्रपार्द्धनलोचनांचल

निरीक्षणेना तटं समो घनमिव प्रिया: सखि विधित्सवस्त
तक्षणं १४९ याको अर्थ तदनंतर अब घरकी ईषत् प्रभा
नें रचित रचना विचित्ररूप स्फुरत प्रकट भयो है स्थिर
निर्मल जल आश्रायतें उपचित आया निकसे श्रीयमुना
जलतें बाहिर निकसे हैं लज्जा करिकें अर्द्ध नीचे लोचन
कें अंचल करिकें निरीक्षण करिकें श्रीयमुनातटको स्पा
मातिर छै कटाक्ष समूह करिकें सघन अंधकारकीनांई
प्रियाहे सखि जैसें करिलीसमूह करिकें अंधेरी डारिली
नी हें विधित्से बेतस वस्त्र तत्क्षणं उननने तेही क्षण एता
दृश विधि करत भए १४९ श्लोक त्वयाघनममामतेम
हतिस घ्नानि प्राविते प्रियेक्षण सुब छिभि: सपदिहंतमाभ
हिति स्वपाली युगलेन चावरणाभालिप्य कुस्तदा प्रतिक्ष
ण सुसंकुच ज्जघनवा ऊ कं ... प्रिया १५० याको अर्थ त्र
याही हे इनकूं तेनें मैंने ... खे घनेनि ... ताहृश घन
को अन्नावलें निरावरण विशेष ... मप्लस घनिको घ
र कुंड बोय बहायो ... सो प्राणप्रियके ईक्षणरूप म
हाबाषि करिकें ... करिकें तात्काल अब मातिव
हावो घद करिकें ... वह याकरिकें आपु नें युगल
हस्त आगें पाछें करिकें आवरण तब करत भए हैं
सो हे आलि तब प्रतिक्षण विषें संकोडत ज्जघनदोऊ
बाऊ दोऊ अंधार कंठ प्रिया: १५० श्लोक तस्मिर्गमोत्थज
लबिंदुम मनोज्ञवीचीप्रांतौ विराजतुर लं युगपद्रुदि
न्या: प्राणप्रिया विहरत प्रियसंग मोद्यदुःखप्रमोद
जनिता विवचाम्बुहासौ १५१ याको अर्थ तेकुं मारिका
सुंदरीकें यमुनाजलमेंतें बाहिर निकसत उठे जो जल
के बिंदु और मनको हरे हें सो एतादृश वीचीत रंगके
प्रांत भागविषें पूर्ण सोभायमान यह बिंदु और बीची

 केप्रांतहोऊएकहीवारसाथहीहृदनीश्रीयमुनाजूवि 
षेसोभितभयेहें जोप्राणतेहूप्रियासुंदरीजोश्रीयमुना
जीमेंतेनिकसेहें सोताकेअत्यंतविरहकरेंतोदुःषतें।
बिंदुरूपआंसप्रकटभएहें औरतेसुंदरीयनकूंप्राण
प्रियश्रीठाकुरजीकोसंगसोंहेगो तातेंतावीचीकेप्रांतभा
गकेफेनकरिकेंउज्वलहास्यप्रकटभयोहे जोश्रीयमु
नांजूको तातेंएकहीवार दुःषऔरप्रमोदलेजानितत्र
पजेकीनांईआंसूऔरहास्य १५१ श्लोक तच्चरणाबुज
नखद्राशिनूपुरनवकांतिभिस्छकालिंद्या नीरमनिर्वे
चनीयप्रभयभवदमंदसौंदर्यं १५२ याकोअर्थ ते
सुंदरीयनकेचरणकमलनतेंजो असंख्यनखचंद्र
औरनूतनजड़ावनूपुरतिनतैंकांतिकरिकेंतोश्री
कालिंदीजूकेनीरकी[illegible]यप्रभाकांतिविचित्र
होतभई सोबहोत[illegible]सौंदर्य[illegible]सीमाहोतभई जो
कहीनजाइ १५३ श्लोक कालिंदीसलिलांतराप्रियसखि
प्राणप्रियस्यांतिकं[illegible]कांतिभिरर्नकेचाणचमत्कारा
न्दधत्यः प्रिया [illegible]वीतानवाद्भुतामृतमयाभोदं स्वमेघ
क्रनेहित्वायांगौर[illegible]मालिमिलितंमोदस्थिराविद्युतः १
५३ याकोअर्थ हे प्रियसषीश्रीकालिंदीजूकेजलमीतरतें
प्राणप्रियश्रीठाकुरजीकेनिकटआए तबसुंदरीयन
कीपरमकालकारकांतिकरिकें वयस्यबालककेईक्ष
णनेत्रकोअत्यंतचमत्कारतेंप्राणप्रियाकीदधत्य ते
जददीपताकीअत्यंतसोभादेषिकरिकें नूतनपरमअ
द्भुतअंमृतमय एताद्रशअंभोदजोमेघकोश्रीठाकुरजी
आपुनेंअंमृतमयअंमौभोदविषेंआवतभई सोकेसें
जेसेंजलदमेघकोंआश्रमिलेकीनांई हेआलि इनअंमृ
तमेघकोंआश्रमिलिबेकोंआनंदसंस्थिराविद्युतआश्रमि

लीहै १५३ श्लोक यथा यथा तदंतस्याः कुमार्योनुसृता
सखि तदीयमणिमंजीरारतपाविरासंस्तथा १
५४ याकोअर्थ जैसेजैसेश्रीयमुनाजीकेतटकीकुमारि
का अनुसरतभईहैं सोहेसखि तैसेंतिनकेमणि
नकेमंजीरघूंघुरू तैसेतैसेपांणिमेतेवाहिरप्रकटहो
तभएहे १५५ श्लोक सायंपुलिनागमनप्रातर्गेहगमन
योर्निजावस्थाः स्यांमांभासिमूकैस्सर्वेरिश्रमुखरैस्तदा
गतिदाः १५५ याकोअर्थ सायंकालकोश्रीयमुनाजी
पुलिनकोंआगमन औरप्रातःकालकूंआपुनेगृहगम
न यहदोऊआपुनीअवस्थाजनावतहैं स्पोमऊलवि
षेंनूपुरगूंगेश्रीठाकुरजीआपुकेसंगमकोंजानतहैं ताते
ताकरिके औरवाहिरमुखरताकोंरके सबकहिदेतहैं
विरहकरिकेंबोलतहें १५५ श्लोक मंजीरसंजिताकानसं
गताभेकलोचने लावण्पमोहितेचकापादन्यासमुता
स्तले १५६ याकोअर्थ मंजीरसद्रायमानसबद
है सोआकानकसंगहे अथातकूंश्रीठाकुरजीकोंआरव
पूरपबालकनलावण्य परमलमलावनपसोह
येताकरिकेंमोहकरतहै एताद्रासुंदरीकेचरणके
न्यासधरिबमकोंकलावणमत करतहै तलविषें
मोहितकरतहै १५६ श्लोक अनुरागानंदहासव्रीडासंको
चनीतिभिः कश्चिद्कवलितोभावस्तासांसमभवत्तदा १
५७ याकोअर्थ अनुराग आनंद हास लज्जा संकोच भय
यहछहपदार्थएकत्रकरिके कोऊएक निर्वचनैकवलि
तभावतेसुंदरीयनकों तवसम्पकहोतभयोहै १५७ श्लो
क आविर्भवंतोथमिलंतउतआश्लिष्टतएकेपसरतंश्रा
तले रेजुस्तदंगेषुतदातदात्मकप्रियस्पभावाईव वा
रिविंदवः १५८ याकोअर्थ जबजलमेंतेंव्रजभक्तवाहि

ब्र·टी· रनिकसेहें तबजलकेविंदुव्रजभक्तनकेअंगपरकेसेसो
भितहें सोकहतहें प्रथमतो विंदुआपुआपुमेंमिलन
हें उत्तमोत्तम तापाछेंअंगविषेरहतहे तापाछेंरूप
रतहे चरणकूं जोयाप्रकारव्रजभक्तनकेअंगविषेसो
भाकोपावतहे तवकृष्णात्मकप्रीत्याप्रियकेरसात्मकभा
वकीनांईजलकेविंदु १५८ श्लोक सर्वोत्तमभावजलधौक्री
डंतोरुसनयनमीनवरो वीटकुमारीसेतुनासाग्र
गतावबलो १५९ याकोअर्थ यहकुमारिकानकेअंगस
र्वोत्तमभावरूपअगाधिसमुद्रविषेंक्रीडाकरतहें कस
केनयनरूपीमीन श्रेष्ठमीनराजकुमारियनकेसतन
टापकूंदेखिकरिकें तेनयनरूपीमीनकोंआगेंजायवे
कोंनसवलहोतभएमीन १५९ श्लोक तदैकदेशेस्मिन्ने
गेकुवलयदलरुःकापिलितिराद्वितीयेव्यासीद्यत्तदपर
कुमार्याश्च हरिदकुदृगाखामाशमपिपरहस्तकर्षणे
वरंप्रभावोहे तत्रापरकृतिमासीदवध्यतिः १६० या
कोअर्थ तत्रापरकपटकुवलयदलाकेएकअंगविषेंको
रूएकमिलिताहरी व्रजभक्तविषेंहूं श्रीठाकुरजीकीदृष्टि
होतभईजातें औरतातेंअपरकुंमारिविषेंश्रीठाकुर
जीकीदृष्टिउनकेअंगकोइनकेंहूंअंगकोपरायहस्त
कोआकर्षणकरिबेमेंवरमपहे ताकोहेतउनकेअंग
कीप्रभाहीलेंतुअपरमायाप्रकारकीमोकोंअवधतिता
नहोतभयोहे १६० श्लोक स्वरूपमेवांबुजलोचनस्य
प्रीतोयतोहेतुरभूद्वधूनां ततस्तदासातिविलक्षणो
नभावनकेनायभवत्प्रसन्नः १६१ याकोअर्थ स्वरूपही
अंबुजलोचनकोश्रीठाकुरजीकेउपर्तेव्रजवधूनकोंप्री
तिविषेस्वरूपही हेतुहोतभयोहे तदनंतरलववस्वरूप
अतिशयविलक्षणभावकरिकें कोऊएकभावकरिकेंप्र

सन्न होत भयो है १६१ श्लोक प्रतीत्यर्थं तासामिव रू
चिरजीवी करन लगे ही त्यासी त्यूर्वं कमलनयनो दासु
भिवपा: निधाय स्कंधे ता: पुनर पिययापूर्वमबला: स
मीक्ष्याति प्रीत: स्मितरुचिरवक्त्र: समवदत् १६२ या
को अर्थ ते व्रजभक्तसुंदरीयनको प्रतीत अर्थ कीनो ई
सुंदरनी वीश्रा पुनें करतल विषें गहण करिकें रू
पहिले कमलनयन देखेको नाही हे उनकूं ता पाछें क
देवके स्के स्कंध विषें नीवी यो राखि करिके तातें सुंदर
वक्त्र रोक्तं जे से पूर्वें अबला: कुसुमको देखि करिकें अ
त्यंत प्रीति करिकें मंद हास करिकें पुलकसुंदरवक्त्र: सम्य
क् बोलत भये श्री ठाकुरजी १६२ श्लोक विहायवसनानि
यद्विहतत्तिमसुदेवात्मिका स्वपूर्वक रागतो विरमक्रध्व
मानंदिता: देवनतु देवहेलनमतो स्त्रांसे मुदा नम
स्कुरुत भूतले अंगुमागमहि कत्वा जलिं १६३ याको अर्थ
जाते तुम वस्त्र छोडि करिके अनुमान करिके देवता
आत्मक जल विषें स्नान करत हो हे आपु पाहिलें सुं
दर निर्मल वक्त्र आत्मक ध्वंआनंदिता तहीन
तो देवहेलन तुम जलाक देवताको अपवस्ताकीनो
हे सो तातें या देवताको हर्ष सो सांत करिके को हर्ष सो प्र
थील ला विषें अंगुभग मस्तक विषें अंजुली पुट बांधि न
मस्कार करो १६३ श्लोक घत्तवता नोस्यपप्पेय चाधि
तनयुक्त मिस्तुत्मय महर्षिभि सर्वात्मना त्मान व
धानम प्यदोनिदो षवाक्का यह दम पिहत्यं १६४ या
को अर्थ आय सुंदरी हो जिनन नें व्रत धरे हे उता व्रत वा
लीयन कूं तो यथ्य वं आपुनी हस्य इच्छा आवे तैसा चेष्टि
त युक्त नाही हे जो या भांति सो कह्यो है वडु बडे महाऋषी
श्वरन नें जो सर्वात्मका आपने आत्माको अनवघानस्तुसा